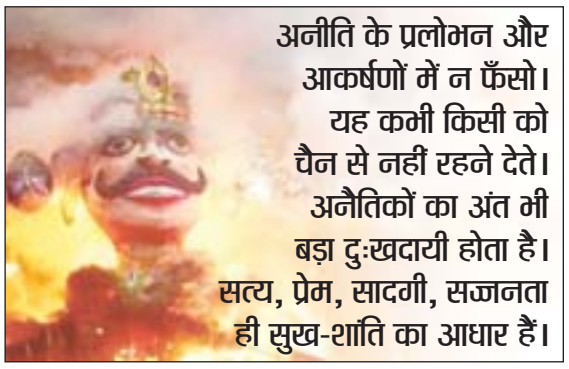

अनीति के प्रलोभन और
आकर्षणों में न फँसो।
यह कभी किसी को
चैन से नहीं रहने देते।
अनैतिकों का अंत भी
बड़ा दुःखदायी होता है।
सत्य, प्रेम, सादगी, सज्जनता
ही सुख-शांति का आधार हैं।

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

संस्थापक–संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अक्टूबर 2015 (वर्ष-28, अंक-08) शांतिकुंज, हरिद्वार वार्षिक चंदा ₹ 40/-, विदेश में ₹ 500/-

E-mail : news.shantikunj@gmail.com news@awgp.in

साधना से सिद्धि के, करिये प्रखर प्रयास।
संकल्प जगे, संयम सधे, बढ़े श्रद्धा-विश्वास॥

आत्मबल एक दिव्य विभूति

आत्मवादी साधक जिस स्वर्गीय भूमिका में निवास करते हैं और जिन विभूतियों के कारण लोकवंदित होते हैं, वे सभी आत्मबल के सहारे उपलब्ध होती हैं। ईश्वर-अनुग्रह को घसीट बुलाना इसी चुम्बकत्व के सहारे सम्भव होता है। इसी कुदाली से अन्तःक्षेत्र को खोदते, कुरेदते हुए विभूतियों के मणि-माणिक उपलब्ध किये जाते हैं। साधना का उद्देश्य ही है आत्मबल सम्पादित करना। इसके लिए जिन चार आधारों को खड़े करना आवश्यक होता है, वे हैं-संकल्प, संयम, विश्वास और श्रद्धा।

साधना-समर के लिए जरूरी है प्रचण्ड मनोबल

संकल्प : संकल्प का तात्पर्य है ऐसा मनोबल, जिसके सहारे निश्चय को कार्यान्वित करने की साहसिकता अक्षुण्ण बनाए रखी जाय। आत्म-सुधार और आत्म-निर्माण का मार्ग श्रम-साध्य और समय-साध्य है। माली को फले-फूले उद्यान की, विद्यार्थी को उपाधि की और व्यवसायी को सम्पदा की प्रतीक्षा धैर्यपूर्वक करनी पड़ती है और अपनी दीर्घकालीन साधना में अटूट धैर्य और मनोबल के साथ लगा रहना पड़ता है।

संचित कुसंस्कारों को निरस्त करके उनके स्थान पर सत्प्रवृत्तियों की स्थापना के लिए धैर्यपूर्वक चिरकाल तक बिना उत्साह गिराए निर्धारित मार्ग पर चलते रहने के लिए संकल्प-शक्ति चाहिए। बहकाने वाले आकर्षणों, प्रलोभनों से विरत करने वाले दबावों से जूझ सकने वाला ही इस लम्बे मार्ग पर बिना विचलित हुए चलता रह सकता है। यह दृढ़ता मनस्वी लोगों में ही होती है। इसके लिए शूरवीरों जैसी पराक्रमी मनःस्थिति चाहिए। उतना सरंजाम जुटाए बिना किसी के लिए भी यह सम्भव नहीं हो सकता कि हिमालय की चोटी चढ़ने जैसी आत्मिक प्रगति का कीर्तिमान स्थापित करे।

चंचलताग्रसित, बाल-कौतुकों के अभ्यस्त और जादुई खेल-तमाशे देखने को आतुर लोग प्रायः इस मार्ग पर देर तक टिक ही नहीं पाते। दूसरी ओर कठिनाई यह है कि बीज को विशाल वट-वृक्ष के रूप में विकसित कर देने का कोई और विधि-विधान भी इस संसार में नहीं है।

कर्मकाण्ड की उपयोगिता

चंचलता को ठुकराने वाला, प्रलोभनों और दबावों से बचाने वाला, दुष्प्रवृत्तियों से जूझने वाला प्रचण्ड मनोबल आत्म-साधना के पथ पर चलने वाले साधक का सर्वप्रथम आधार है। इसके उपार्जन, अभ्यास के लिए ही उपासना परक कर्मकाण्डों की व्यवस्था है। शारीरिक अनुशासन, नियत स्थान, नियत समय, नियत मात्रा में नियत विधान से उपासना-क्रम सम्पन्न करने की तत्परता बरतने के पीछे संकल्प-बल के अभिवर्धन की प्रक्रिया जुड़ी हुई है।

साधना विधि में ढील-पोल नहीं चलने दी जाती है, वरन् निर्धारित क्रिया-कृत्यों को राई-रत्ती पूरा करना पड़ता है। इस फौजी अनुशासन को ठीक तरह निबाहते चलने पर मनोनिग्रह की सफलता मिलती है और उस आत्म-विजय पर गर्व-गौरव अनुभव करता हुआ साधक जीवन-संग्राम में बढ़े-चढ़े आदर्शवादी पुरुषार्थ, पराक्रम कर सकने में समर्थ होता है।

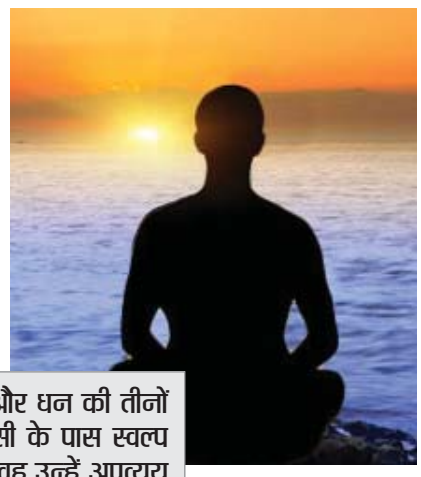

संयम अपनायें, अभाव मिटायें

संयम : पूजा-उपासना के समय पर निर्धारित विधि-विधान व्यायामशाला में होने वाले अभ्यास एवं प्रयोगशाला में किये गये प्रयोग के समतुल्य माना जा सकता है। उसकी प्रौढ़ता, प्रखरता, गुण-कर्म-स्वभाव में घुसी हुई अव्यवस्था को सुसन्तुलन में बदलने से ही सम्भव होती है। 'संयम' शब्द इसी के लिए प्रयुक्त होता है।

शरीर, मस्तिष्क और धन की तीनों क्षमताएँ भले ही किसी के पास स्वल्प मात्रा में हों, पर यदि वह उन्हें अपव्यय से बचाकर सदुपयोग कर सकने की कला में प्रवीण हो गया है तो उसका प्रतिफल बलवानों, विद्वानों एवं धनवानों की सम्मिलित शक्ति से भी अधिक श्रेयस्कर हो सकता है। इसे संयम का ही चमत्कार कह सकते हैं।

इंद्रियाँ अपने विषयों में अतिवाद बरतने को मचलती हैं और खुली छूट चाहती हैं। उन पर अंकुश न लगाया जाय तो फिर वासनाओं की उच्छृंखलता, शरीर, मन, धन और सम्मान में आग लगाते चली जायेगी। जीभ का चटोरापन किस प्रकार पेट को खराब करता है और पेट की सड़न किस प्रकार चित्र-विचित्र रोग उत्पन्न करती है, यह किसी से छिपा नहीं है। जननेन्द्रिय का असंयम किस प्रकार मनुष्य को निस्तेज और खोखला बना देता है, इसके उदाहरणों से यह संसार भरा पड़ा है। तृष्णा के वशीभूत लोग किस प्रकार पाप संचय में लगे हैं और उसे संकीर्ण दुष्प्रयोजनों में लगाये रखकर किस प्रकार अनर्थ सम्पादन कर रहे हैं, यह किसी से छिपा नहीं है। अहंता की उच्छृंखलता किस प्रकार मिथ्या प्रदर्शन के आडम्बर रचती और कैसे ईर्ष्या-द्वेष के विष बीज बोती है, उसका अवांछनीय नग्न नृत्य कहीं भी देखा जा सकता है।

शारीरिक और मानसिक असंयम का ही एक रूप धन का अपव्यय है। व्यसनों में, विलासिता में, ठाट-बाट में, आतंक-अनाचार में जितना धन व्यय होता है, उतना यदि रोका जा सका होता और उसे सत्प्रयोजनों में लगाया जा सकना सम्भव हुआ होता तो स्वल्प साधनों से ही परोपकार का महत्त्वपूर्ण प्रयोजन भी सम्भव हो सकता है।

फूटे बर्तन में दूध दुहने से दुधारू गाय पालने का सौभाग्य निरर्थक चला जाता है। शरीर और मन में कषाय-कल्मषों के अगणित छिद्र हो रहे हों तो फिर स्वउपार्जित सम्पत्तियों और ईश्वर प्रदत्त विभूतियों का कोई कहने लायक परिणाम न निकलेगा। वे समस्त उपलब्धियाँ निरर्थक चली जायेंगी और उल्टा अनर्थ उत्पन्न करेंगी। शरीर, मस्तिष्क और धन की तीनों क्षमताएँ भले ही किसी के पास स्वल्प मात्रा में हों, पर यदि वह उन्हें अपव्यय से बचाकर सदुपयोग कर सकने की कला में प्रवीण हो गया है तो उसका प्रतिफल बलवानों, विद्वानों एवं धनवानों की सम्मिलित शक्ति से भी अधिक श्रेयस्कर हो सकता है। इसे संयम का ही चमत्कार कह सकते हैं।

एकाग्रता की शक्ति सर्वविदित है। ध्यान में चिन्तन के बिखराव का केन्द्रीकरण किया जाता है। एकाग्रता की शक्ति का सदुपयोग करने वाले ही अपने-अपने विषय में प्रवीण, पारंगत, निष्णात एवं विशेषज्ञ बनते हैं। एकाग्रता और कुछ नहीं, मस्तिष्कीय संयम है। इन्द्रिय संयम, विचार संयम, समय संयम, वाणी संयम, धन संयम आदि के रूप में यदि अपव्यय को रोकना और सामथ्यों को सत्प्रयोजनों में एकनिष्ठ भाव से लगाना संभव हो सके तो समझना चाहिए कि प्रगति का राजमार्ग मिल गया।

आत्मा के अमृत स्रोत : विश्वास-श्रद्धा

संकल्प और संयम दोनों शरीर और मन की संयुक्त उपलब्धियाँ हैं। इन्हें आत्मसाधना का पूर्वार्द्ध कह सकते हैं। इनका सीधा सम्बन्ध और प्रभाव भौतिक गतिविधियों के साथ जुड़ा रहता है। अस्तु इन दोनों को स्थूल वर्ग का गिना गया है और इनके सत्परिणामों को उन सिद्धियों के रूप में देखा जाता है, जिनका आधार एवं प्रभाव लौकिक होता है और जिन्हें चमत्कारी कहा जाता है। उत्तरार्द्ध के रूप में विश्वास और श्रद्धा; इन दो भाव संवेदनाओं की गणना होती है। इन्हें अन्तरात्मा के गहन स्तर से निकलते हुए अमृत स्रोत कहा जा सकता है।

विश्वास : विश्वास अनिश्चितता का अंत करता है और पूरे मनोयोग से कुछ कर गुजरने की तत्परता उत्पन्न करता है। आध्यात्मिक मान्यताओं के प्राणवान बनने और फलित होने की शक्ति विश्वास से ही उत्पन्न होती है।

आत्मिक क्षेत्र में अन्धविश्वास भी कम हानिकारक नहीं होते हैं। अस्तु विवेकयुक्त विश्वासों को ही मान्यता मिलनी चाहिए, जिन आदर्शों, सिद्धांतों, आस्थाओं को मान्यता दी जानी है, उनके बारे में आवश्यक छानबीन कर ली जाय, तब इस निष्कर्ष पर पहुँचा जाय कि जो स्वीकार किया जा रहा है वह नैतिकता एवं उच्चस्तरीय आदर्शवादिता का तथ्यपूर्ण समर्थन करता है या नहीं।

देखा जाता है कि ईश्वर का भजन तो होता है, पर उस पर विश्वास का कोई लक्षण नहीं दीखता। यदि उसके अस्तित्व को सच्चे मन से स्वीकारा जाता तो उसके सुनिश्चित विधि-विधान कर्मफल को भी हृदयंगम किया गया होता और अनीति के मार्ग पर एक कदम भी आगे बढ़ सकना सम्भव न होता। सर्वव्यापी, न्यायकारी, निष्पक्ष कर्म-कसौटी पर खरे-खोटे की परख करने वाले परमेश्वर पर जो विश्वास करेंगे उनके लिए ''सियाराममय सब जग जानी'' की मान्यता अपनाकर हर किसी से सद्व्यवहार करने के अतिरिक्त और कोई चारा ही न रह जायेगा।

विश्वास के फलस्वरूप झाड़ी का भूत, रस्सी का साँप और आशंका का आतंक रोमांचकारी भय संचार कर सकता है तो उसकी उच्च स्तरीय प्रतिष्ठापना से पत्थर में से देवता भी प्रकट हो सकते हैं। मीरा के गिरधर गोपाल, रामकृष्ण परमहंस की काली, एकलव्य के द्रोणाचार्य मात्र उनके गहन विश्वास द्वारा किए गये चमत्कारी उत्पादन भर कहे जा सकते हैं।

श्रद्धा-सर्वस्व समर्पण की उमंग

श्रद्धा : अध्यात्म मार्ग के पथिकों को विवेकपूर्वक अपने आदर्शों की यथार्थता और लक्ष्य की प्रखरता के सम्बंध में असंदिग्ध मनःस्थिति का अन्त करना चाहिए। उन्हें लक्ष्य एवं साधना पर प्रगाढ़ विश्वास का इतना प्रचण्ड चुम्बकत्व उत्पन्न करना चाहिए कि सफलता स्वयं ही खिंचती हुई चली आये।

आत्मिक सफलताओं का अन्तिम, सबसे प्रबल और समर्थ ब्रह्मास्त्र ही श्रद्धा है। श्रद्धा का तात्पर्य है उत्कृष्टता के प्रति इतनी गहन संवेदना का उद्भव, जिसके कारण उसके पाने के लिए सब कुछ निछावर कर देना भी कठिन दिखाई न पड़े। यहाँ दीपक और पतंगों का, चंद्र-चकोर का, पपीहा-स्वाती की बूँद का उदाहरण ठीक बैठता है।

प्यार तो बराबर वालों और छोटों से भी किया जा सकता है। उत्सुकता तो व्यसन और विनोद के लिए भी हो सकती है। उमंग तो दुष्कर्मों के लिए भी उठती है। इन संवेदनाओं से श्रद्धा की तुलना नहीं हो सकती। वह तो मात्र उच्च आदर्शों के लिए और उत्कृष्ट व्यक्तित्वों पर ही केन्द्रित हो सकती है, जिनका अनुसरण करने पर आत्म-कल्याण हो सकता हो। ईश्वर पर, उपासना पर, लक्ष्य पर, मार्गदर्शक पर जितनी गहन श्रद्धा होगी, उसी अनुपात से आत्म-साक्षात्कार का, ईश्वर प्राप्ति का उद्देश्य पूरा होगा।

रामायण में श्रद्धा-विश्वास की उपमा भवानी और शंकर से दी गयी है। गीता का कथन है- ''श्रद्धा मनोऽयं पुरुष वो यच्छृद्धः स एव स'' यह पुरुष (आत्मा अथवा परमात्मा) श्रद्धा तत्त्व से उत्पन्न होता है। जो जिस स्तर की श्रद्धा अपनाये हुए है, वह ठीक उसी प्रकार का है।

आत्मोत्कर्ष के चारों शक्ति साधन जुटाये जाने आवश्यक हैं। संयम से शरीर, संकल्प से मन सधता है। विश्वास से चित्त और श्रद्धा से अहं की, आत्मा की शक्ति निखरती है। इसी चतुर्विध शक्ति संचय के लिए विविध प्रकार के योग साधन एवं तप विधान विनिर्मित किये गये हैं।

वाङ् मय खण्ड-जीवन देवता की साधना-आराधना, पृष्ठ 7.25-30 से संकलित-सम्पादित

यदि अब न चेते तो विनाश होकर रहेगा

समाधान के निमित्त कुछ सकारात्मक सुझाव

विशेष सामयिक सम्पादकीय

अदूरदर्शिता को एक अभिशाप ही माना जाना चाहिए, जो तात्कालिक लाभ को ही सब कुछ मानती है और यह नहीं सोच पाती कि जो किया जा रहा है, उसका कुछ अनिष्टकर परिणाम तो नहीं होने जा रहा। इस शताब्दी (1900 से 2015) की वेला में जनमानस पर कुछ ऐसा उन्माद चढ़ा है कि रोज सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी का पेट चीर कर एक ही दिन में सारे अण्डे निकाल कर देखते-देखते धन कुबेर बन जाने की ललक ही चरितार्थ होती देखी जा सकती है।

दोहन के दुष्परिणाम

युद्धोन्माद एवं आणविक विभीषिका की चर्चा यहाँ नहीं भी करें तो कुछ ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाण सामने हैं जो बताते हैं कि मनुष्य प्रकृति का अनापशनाप दोहन करने पर तुला हुआ बैठा दिखाई पड़ रहा है। बाजारवाद, पूँजीवाद औद्योगीकरण की बाढ़ लेकर आया। बड़े-बड़े उद्योगों की प्रतिद्वन्द्विता में कुटीर उद्योग ठहर न सके और दमघोंटू प्रदूषण के साथ गरीबी और बेकारी का माहौल बन गया। अमीरों को अधिक अमीर और गरीबों को और गरीब बनाने का सारा श्रेय आधुनिक वैधानिक औद्योगीकरण को जाता है। शहरों की आबादी घिचपिच हो बढ़ती चली जा रही है और गाँवों से प्रतिभा पलायन जारी है। शहर इस उमड़ते जनप्रवाह का बोझ सहन कर नहीं पा रहे और गाँव संसाधन एवं प्रतिभारहित होते चले जा रहे हैं।

इन दिनों वायुमण्डल इतना प्रदूषित एवं गर्म होता चला जा रहा है कि जल्दी ही समाधान न खोजा गया तो मानवता का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। बात मात्र भारत ही नहीं, पूरे विश्व के परिप्रेक्ष्य में कही जा रही है। **'ग्लोबल वॉर्मिंग'** अब पूरे दल-बल के साथ अपने दुष्परिणामों के साथ हमारे समक्ष है एवं इसे जन्म देने में हम सबका हाथ है। अतिशय सुविधा पाने की ललक, अनगढ़ लालसा का ही प्रतिफल है कि हमारी यह सुन्दर-सी धरती अब निरन्तर गर्म होती जा रही है। परिणाम मौसम के असंतुलन-ऋतु विपर्यय के रूप में सामने है। इसकी अनदेखी करना वैसा ही है जैसा शिकारी को पीछे आता देख शुतुरमुर्ग बालू में मुँह छिपा लेता है।

ऋतु विपर्यय का क़हर

पिछले दिनों श्रावण एवं भाद्रपद मास पूरे देश में ऐसे बीते जैसे ज्येष्ठ मास चल रहा हो। जब पानी नहीं बरसना चाहिए था-फाल्गुन व चैत्र में तो वह बरस गया, फसलों का नुकसान कर गया, पर जब बरसना था तो बादलों के दर्शन दुर्लभ हो गए। पूरे देश ने यह 2015 वर्ष सर्वाधिक गर्म वर्ष के रूप में झेला है एवं आगामी 2016 वर्ष को और भी गर्म हो जाने की मौसम विभाग की भविष्यवाणी हमें सिहरा देती है। पर्यावरण प्रदूषण का कारण है वातावरण के साथ छेड़खानी और दुष्परिणाम है ऋतुओं का असंतुलन-कहीं सूखा, कहीं अतिशय बाढ़ एवं विभिन्न प्रकार की व्याधियाँ।

बढ़ रहे रेगिस्तान

ऊपर से सीमेण्ट-कंक्रीट के भवनों से युक्त बड़े शहर तेजी से फैलते जा रहे हैं। स्मार्ट सिटी योजना निश्चित ही वातावरण को और गर्म बनाएगी, साथ ही अब स्मार्ट विलेज के नाम पर ग्रामों को भी उस प्रक्रिया में जोड़ने की योजना बनी है। जब तक हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ करते रहेंगे और ऐसी योजनाओं को समग्र आकार देने के स्थान पर मात्र कुरूप, बेडौल शहरों को बढ़ने देंगे, तब तक हम प्रकृति के अभिशप्त इस स्वरूप को ही देखेंगे। बढ़ती जनसंख्या एवं उद्योगों के कारण निवास, कृषि, ईंधन आदि से जुड़ी समस्याएँ भी बढ़ी हैं और वृक्ष बुरी तरह काटे गए हैं। वायुशोधन की प्रक्रिया रुकी है और भूक्षरण तेजी से हो रहा है। बड़े-बड़े हाइवे बनने चाहिए पर वृक्षारोपण के साथ-साथ। पश्चिम के देशों ने यही किया है, पर हमारे योजनाकारों ने इस पक्ष पर सोचा भी नहीं। इसी कारण रेगिस्तान बुरी तरह बढ़ते चले जा रहे हैं। मथुरा, आगरा, ब्रज क्षेत्र अब 4 से 6 माह तक धूलभरी आँधियों से त्रस्त रहता है, जबकि आज से 40 वर्ष पूर्व ऐसा नहीं था।

पानी पर होंगे युद्ध

भूजल प्रदूषण एवं गंगा सहित सभी नदियों का प्रदूषण कितना बढ़ गया है, सभी जानते हैं। गंगा का अस्तित्व मिटने की कगार पर आ गया है। भूजल का स्तर नीचे, और नीचे जा रहा है। कोई आश्चर्य नहीं कि आज से दस वर्ष के अंदर पानी पर जगह-जगह दंगे और युद्ध होने लगें। क्षेत्रीय, प्रांतीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पानी पर युद्ध छिड़ सकते हैं। ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं और धरती के ग्लेशियर्स (वृक्ष-वनस्पति जो भूक्षरण रोकते थे) समाप्त हो रहे हैं।

कहर बरसने से पूर्व सँभलें

परम पूज्य गुरुदेव ने अखण्ड ज्योति नवम्बर 1988 में लिखा है कि *''यह युगसंधि की वेला है। इस कुसमय का अंत होते-होते क़हर बरसेगा। किन्तु जनमानस की समझदारी जागते ही ऐसा समय आएगा कि पिछले सभी घाटे की पूर्ति हो जाएगी ताकि गहरी खाई पाटकर समतल ही नहीं वरन पुष्पोद्यान के रूप में छटा दिखने लगे।''* यह युगऋषि का आशावादी उद्घोष है और इसे सत्य आपको और हम सभी को करना है। कैसे करें, आइए इस पर चिन्तन करें।

किया क्या जाय?

सामूहिक स्तर पर कई कार्य आरम्भ किए जा सकते हैं, जो अभी से आरम्भ हों और 2020 तक निरन्तर चलें।

1. जनजागरूकता बढ़ाने के लिए आज ही समस्याओं के कारण और निवारण पर चर्चाओं के दौर चलें। हर व्यक्ति को सामूहिक महाविनाश रोकने के लिए भागीदारी करने हेतु हम राज़ी करें।

2. आध्यात्मिक पुरुषार्थ के रूप में समूह साधना का क्रम और तीव्र गति पकड़े और वातावरण परिशोधन हेतु हम न केवल प्रार्थना करें, शब्दशक्ति का विलक्षण ब्रह्मास्त्र इसके लिए प्रयोग करें। गायत्री मंत्र बहुत ही नहीं, सर्वाधिक शक्तिशाली है। यह नूतन सृष्टि का सृजन कर सकता है। व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर साधना हर जगह चले। **''सबके लिए सद्बुद्धि-सबके लिए उज्ज्वल भविष्य''** की प्रार्थना स्थान-स्थान पर चले। इससे चारों ओर छाया बौद्धिक उन्माद कम होगा, ब्राह्मणत्व की जीवन शैली अपनाने की ललक बढ़ेगी एवं समझदारी बड़ी तेजी से गति पकड़ेगी।

3. वृक्षारोपण स्थान-स्थान पर करें। तरुपुत्र, तरुमित्र अभियान में भागीदारी करें। बंजर पड़ी पहाड़ियों को हराभरा बनाएँ। अपने पूर्वजों की स्मृति में सबसे श्रेष्ठ पुण्य कोई है तो वह है वृक्षारोपण, उसका पालन-पोषण। अपने घर से लेकर सड़कों तक सभी ओर स्वच्छता विस्तार के साथ वृक्षारोपण आन्दोलन को भी गति दें। इस हरीतिमा संवर्धन महायज्ञ हेतु मण्डल बनें और पौधे सर्वसुलभ कराएँ। गायत्री परिवार बड़े विशाल स्तर पर, बड़े परिमाण में पौधों की नर्सरी लगाकर इन्हें शासकीय सहयोग से भी उपलब्ध कराता है। यदि इच्छा शक्ति हो तो हरीतिमा का आच्छादन उसी तेजी से होने लगेगा, जितनी तेजी से शहरीकरण हुआ है या अगले दिनों होगा।

4. पानी को बचाएँ। यह अमूल्य निधि है। हमारे देश का मराठवाड़ा, छत्तीसगढ़ एवं बिहार, झारखंड क्षेत्र बहुत विकराल सूखे से जूझ रहा है। अभी 2016 आने वाला है। अभी से पानी की बचत के, वर्षा के पानी की खेती के एवं जिस तरह संभव हो उसको व्यर्थ न जाने देकर बचाने के प्रयोग हों। इससे पानी रुकेगा, अगली पीढ़ी के लिए सुलभ होगा एवं हम सभी धीरे-धीरे जल स्तर बढ़ा सकेंगे। पानी चाहे नदी का हो, कुएँ या बावड़ी का, प्रदूषित न होने दें। जितना जरूरी है, उतना ही प्रयोग करें। व्यर्थ उसको फेकें नहीं। हर व्यक्ति के समन्वित सहयोग से यह एक आन्दोलन बन जाएगा।

5. निर्मल गंगा जन-अभियान में भागीदारी करें। हमें 2015 से 2025 तक 10 लाख स्वयंसेवकों की आवश्यकता है, जो इस महान अभियान में गंगा व उसकी सहायक नदियों के प्रदूषण निवारण हेतु जागरूकता बढ़ाने, आगे बढ़कर मदद करने, गंगा प्रज्ञा मण्डल बनाने एवं नदी के दोनों ओर हरी चूनर पहनाकर नदियों को ग्लेशियर (धरती के) खड़ा करने का भागीरथी पुरुषार्थ करेंगे। इतने बड़े गायत्री परिवार में ऐसे व्यक्ति निकल आएँ तो देश का कायाकल्प हो जाएगा। फिर से घी-दूध की नदियाँ बहने लगेंगी और वातावरण ही बदल जाएगा।

6. 'स्मार्ट सिटी' व 'विलेज' योजना में गायत्री परिवार को सलाहकार मण्डल की भूमिका निभानी चाहिए। इसके लिए हर स्तर पर प्रयास किए जाएँगे, ताकि कोई भी कार्य ऐसा न हो जिससे 'ग्लोबल वॉर्मिंग' बढ़े और हमारा वानस्पतिक समुदाय, फ्लोरा एवं फाना को नुकसान पहुँचे। वैज्ञानिकों का एवं लीगल एक्सपर्ट्स का एक थिंक टैंक बड़े स्तर पर राजनयिकों से चर्चा करने के लिए बनाया जा रहा है, ताकि सारी बात सर्वांगपूर्ण प्रगति को दृष्टि में रखते हुए योजना बनाने वालों को समझाई जा सके। यह कार्य जल्दी से जल्दी करना होगा। जब यह पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं, तब निर्मल गंगा जन अभियान के लीगल प्रकोष्ठ के पाँच हाईकोर्ट से जुड़े वरिष्ठ अधिवक्तागण चर्चा करने एकत्रित हुए हैं। उन्हीं में और विस्तार दिया जाएगा। सभी उच्च व सर्वोच्च न्यायालयों से जुड़े अधिवक्तागण एवं आय.आय.टी., एन.आय.टी., आई.आई.एम. के वैज्ञानिक-विद्वानों को इसमें जोड़ा जाएगा। हम सभी को आशावादी होना चाहिए कि जनमानस जागेगा तो सभी समस्याओं पर काबू पा लिया जाएगा।

7. सोशल मीडिया पर सक्रियतापूर्वक हम सभी को अब काम करना होगा। जो काम पहले कुछ व्यक्तियों के बीच होता था, उसे लाखों-करोड़ों के बीच फैलाना है। आज का यह सबसे शक्तिशाली माध्यम है। इसी के माध्यम से मीडिया को भी प्रभाव में लिया जा सकता है और अपनी बात जन-जन तक पहुँचायी जा सकती है।

अगली दशाब्दियों की संभावनाएँ अद्भुत और अनुपम हैं। एकता और समता के सिद्धान्तों पर भविष्य की सम्पूर्ण व्यवस्था बनेगी। इस भवितव्यता के अनुरूप हम अभी से धीमी-धीमी से आगे चलकर तीव्र तैयारियाँ शुरू कर दें तो यह मानव जाति के हित में होगा। अगली दुनिया सुसंस्कृत, सभ्य मनुष्य जाति की होगी। विवेक सर्वोपरि होगा और समझदारी के माहौल में मात्र न्याय ही जीवित रहेगा, औचित्य ही सराहा जाएगा, उसी की तूती बोलेगी।

भविष्य की चिंता और महत्त्वाकांक्षाओं की आग में जलते रहने से अच्छा है वर्तमान को आनन्दपूर्वक जीना, उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग करते हुए जीवन सफल बनाना।

पंचम योग, संस्कृति एवं अध्यात्म महोत्सव का भव्य शुभारंभ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रयासों से बड़ी तेजी से हो रहा है भारतीय संस्कृति का वैश्विक विस्तार

उद्घाटन समारोह में मंचासीन गणमान्य

समाचार पत्र संस्कृति संचार के नये अंक का विमोचन

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की योग एवं सांस्कृतिक प्रस्तुति

मुख्य अतिथि केन्द्रीय आयुष मंत्री

शांति, आत्मिक समृद्धि और मानवीय हितों के पक्षधर अध्येताओं का एक महान समागम-योग, संस्कृति एवं अध्यात्म महोत्सव का 1 अक्टूबर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार में भव्य शुभारंभ हुआ। केन्द्रीय आयुष मंत्री माननीय श्रीपद नाईक, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या, पद्मश्री डी.आर. कार्तिकेयन ने 6 अक्टूबर तक चलने वाले इसका दीप प्रज्वलन, देव पूजन के साथ शुभारंभ किया।

योग, संस्कृति और अध्यात्म मानवीय क्षमताओं को अनुशासन और संयमपूर्वक विकसित करने और उन्हें श्रेष्ठ उद्देश्यों में सुनियोजित करने के आयाम हैं।
मान. डॉ. प्रणव जी, कुलाधिपति

15 देशों के 400 विदेशी प्रतिभागी

देसंविवि पिछले पाँच वर्षों से हर वर्ष यह अंतर्राष्ट्रीय समारोह आयोजित कर रहा है। इसकी लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। इस वर्ष 15 देशों के 400 विदेशी अतिथि भाग ले रहे हैं। इनमें लाटविया, लुतानिया, इटली, हांगकांग, चेक रिपब्लिक, अमेरिका, नॉर्वे, हॉलेण्ड, अर्जेण्टिना, बाली, रूस, नेपाल आदि देशों से आये योग प्रशिक्षु एवं संस्कृति-संवाहक शामिल हैं।

वैश्विक ख्याति के गणमान्य

उद्घाटन समारोह में आकांक्षा जोशी, पद्मश्री कार्तिकेयन, हरिसिंह खालसा, जॉन फरंग मॉस्टेड, डॉ अल्फ्रेडो लावरिया, प्रो. काली पोएटर्स, प्रो. सिग्मा एलनकाटा, प्रो वल्दिस पिराग्स, प्रो हर्षा ग्रामिगर, प्रो गोडा देनापेने आदि माननीय कुलाधिपति जी के साथ मंचासीन थे।

कुलपति श्री शरद पारधी ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने महोत्सव के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए योग, संस्कृति और अध्यात्म को मानवता के तीन प्रमुख आधार बताया। उन्होंने इनके विश्वव्यापी विस्तार में परस्पर सहयोग के प्रति सभी का आभार व्यक्त किया।

कुलाधिपति माननीय डॉ. साहब ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में योग, संस्कृति और अध्यात्म की मार्मिक व्याख्या की, जिससे प्रतिभागियों को सही दिशा में चिंतन-मनन करते हुए आयोजन का भरपूर लाभ लेने का अवसर मिला।

उद्घाटन समारोह में अतिथियों द्वारा देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित दो समाचार पत्र संस्कृति संचार और रिनांसा का विमोचन किया गया। उत्तराखंड योग की ब्राण्ड एम्बेसेडर देव संस्कृति विवि. की छात्रा सुश्री दिलराजप्रीत कौर एवं 90 मिनट तक शीर्षासन करने का विश्व रिकॉर्ड बनाने वाले आदित्य प्रकाश को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्रतिभाओं का सम्मान

(विस्तृत समाचार अगले अंक में)

श्रीमाधोपुर में शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने की प्राण प्रतिष्ठा, 2000 लोगों ने ली दीक्षा

श्रीमाधोपुर, सीकर (राजस्थान)

शांतिकुंज के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 26 सितम्बर को श्रीमाधोपुर में नवनिर्मित गायत्री शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा की। यह प्राण प्रतिष्ठा 24 से 27 सितम्बर की तारीखों में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुई।

चार दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा समारोह का शुभारंभ विशाल मंगल कलश यात्रा के साथ हुआ। हजारों बहिनों ने गायत्री माता की जय-जयकार और 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' के नारों से पूरा नगर गूँजायमान कर दिया।

तीन दिनों में हजारों लोगों ने विश्वकल्याण की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ समर्पित कीं। गायत्री महाविद्या एवं यज्ञ के महत्व को विस्तार से समझा। इनकी उपासना-साधना से आत्म परिष्कार की प्रेरणा दी गयी। स्वच्छता, स्वास्थ्य संरक्षण और नशामुक्ति जैसे आन्दोलनों के लिए विशेष उत्साह जगाया गया।

आदरणीय डॉ. साहब का संदेश

आदरणीय डॉ. साहब ने प्रातःकाल प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात् दिये अपने संदेश में गुरुमंत्र गायत्री के युगशक्ति स्वरूप की विस्तार से व्याख्या की। सायंकाल दीपयज्ञ के समय उन्होंने जनमानस को युगधर्म का बोध कराया। उन्होंने कहा-

सुख, शांति, समृद्धि, स्वर्ग सब हमारे जीवन में ही हैं। अपनी सोच बदलने, उन्हें पहचानने और साधना के माध्यम से साकार करने की जरूरत है। अपने लिए तो पशु भी जीते हैं। इन्सान वही है जो औरों के लिए जिये।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए

युवा उत्कर्ष की झाँकी

शक्तिपीठ के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में क्षेत्र के युवाओं में युगशक्ति गायत्री के प्रति निहित आस्था के दर्शन कर हृदय गद्गद हो गया। दीक्षा लेने वाले 2000 लोगों में 1500 विभिन्न विद्यालयों-महाविद्यालयों के ऐसे विद्यार्थी थे, जो स्वेच्छा से आये थे।

स्थानीय गायत्री परिवार ने कार्यक्रम से पूर्व कई विद्यालयों, महाविद्यालयों में संपर्क कर शिक्षक-विद्यार्थियों को गायत्री की महत्ता बतायी, युग निर्माण आन्दोलन की जानकारी दी। जो इन्हें अपनाकर अपना जीवन सँवारना चाहते हैं, ऐसे विद्यार्थियों को दीक्षा लेने के लिए आमंत्रित किया। प्रयास यशस्वी रहे, 1500 छात्र स्वेच्छा से आये, आदरणीय डॉ. साहब से दीक्षा ली, युगधर्म के निर्वाह के लिए उत्साहित हुए।

अगाध आस्था की सुंदर परिणति

गायत्री शक्तिपीठ, श्रीमाधोपुर का निर्माण एक प्राचीन बालाजी मंदिर का नवोन्मेष कर किया गया है। अपना जीवन पूरी तरह मिशन को समर्पित कर चुके कार्यकर्त्ता श्री महेन्द्रमोहन पारिक के मुख्य मार्गदर्शन और देखरेख में यह बनकर तैयार हुआ। पूरे क्षेत्र में मिशन के विभिन्न आन्दोलनों को गति मिले, युग चेतना का तेजी से विस्तार हो, ऐसे प्रयास आयोजकों द्वारा किये जा रहे हैं।

कार्यक्रम संचालन के लिए शांतिकुंज से सर्वश्री दिनेश पटेल, गौरीशंकर सैनी, सूरज प्रसाद शुक्ला, ओंकार पाटीदार, बसंत यादव, नारायण रघुवंशी, दयानंद शिववंशी की टोली पहुँची थी।

स्व. श्रीमती बिमला देवी ट्रस्ट द्वारा संचालित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का उद्घाटन

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 26 सितम्बर की प्रातः श्रीमाधोपुर कस्बे की पटवारियावली वाली ढाणी में स्वर्गीय श्रीमती बिमला देवी सेवा ट्रस्ट द्वारा विनिर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का उद्घाटन किया। मिशन के समर्पित कार्यकर्त्ता श्रीमान सीता सहाय सैनी और उनके परिवार के मुख्य योगदान से इस केन्द्र का निर्माण किया गया है।

नवनिर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र क्षेत्र में स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलम्बन, गौसंवर्धन, जैविक कृषि को प्रोत्साहन जैसे बहुआयामी अभियानों को गति देने के लिए बनाया गया है। इस तीन मंजिला भवन में तल मंजिल पर स्वास्थ्य केन्द्र-हॉस्पिटल का निर्माण किया गया है। प्रथम मंजिल पर युग साहित्य पुस्तकालय की स्थापना की गयी है। द्वितीय मंजिल पर कम्प्यूटर शिक्षा, बाल संस्कार शाला, स्वावलम्बन प्रशिक्षण आदि चलाये जायेंगे।

इस केन्द्र के निर्माण और संचालन में मिशन के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री सीता सहाय सैनी और उनके पूरे परिवार ने प्रमुख भूमिका है। पिता श्री मोतीलाल जी, भाई श्री बनवारी लाल तथा उनके बालक प्रवीण कुमार, नवीन कुमार, श्रद्धा-प्रज्ञा सभी ही मिशन की सेवा में समर्पित है। छोटा भाई श्री गौरीशंकर सैनी शांतिकुंज में जीवनदानी कार्यकर्त्ता हैं।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के उद्घाटन समारोह में केन्द्र से जुड़ी भावी संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह केन्द्र सिर्फ इस ढाणी को ही नहीं, बल्कि आसपास के गाँवो के लोगों को भी शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक उत्कृष्टता प्रदान करेगा। शांतिकुंज

आदरणीय डॉ. साहब सैनी परिवार पर स्नेहवर्षा करते हुए

स्थित ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की भाँति यहाँ यज्ञोपैथी से तथा पंचगव्य चिकित्सा से विभिन्न रोगों का उपचार किया जायेगा।

संस्था के प्रमुख श्री सीता सहाय सैनी और उनके परिवार ने आदरणीय डॉ. साहब को विश्वास दिलाया कि इस सेवा संस्थान द्वारा ग्रामीणों की भरपूर सेवा की जायेगी। उन्होंने क्षेत्र में रासायनिक खादों के कारण बंजर हो रही भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए जैविक कृषि को प्रोत्साहित करने का आश्वासन भी दिया।

ज्ञानीजन बोलते तो कम हैं, किंतु जब बोलते हैं तो उनकली वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और व्यक्तित्व का जादूई प्रभाव पड़ता है।

ज्ञान संजीवनी को जन-जन तक पहुँचाकर कर रहे हैं समाज सेवा

गाँव-गाँव पहुँची साइकिल यात्रा

घर-घर बाँटा डेढ़ लाख का साहित्य

साइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाते जिलाधिकारी

पीलीभीत (उत्तर प्रदेश)

जिला समन्वय समिति पीलीभीत ने युग साहित्य विस्तार वर्ष के परिप्रेक्ष्य में गाँव-गाँव साइकिल यात्रा निकाली। 7 सितम्बर से 15 सितम्बर तक चली इस नौ दिवसीय साइकिल यात्रा में 200 युग सेनानी शामिल हुए। गाँव-गाँव, हर नुक्कड़-चौराहे पर सभाएँ आयोजित हुईं। इनके माध्यम से कुल डेढ़ लाख रुपये का युग साहित्य लोगों में निःशुल्क वितरित किया गया। पत्रकों के माध्यम से नशा, दहेज, कन्याभ्रूण हत्या जैसी बुराई से बचने का संदेश दिया गया, संकल्प कराये गये।

7 सितम्बर को जिलाधिकारी श्री मासूम अली सरवर द्वारा हरी झंडी दिखाए जाने के साथ साइकिल यात्रा आरंभ हुई। जिलाधिकारी महोदय के अलावा गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री अनन्तराम पालिया, श्री सत्यपाल यादव, नगरपालिका चेअरमैन श्री छेदालाल जायसवाल ने इस यात्रा का प्रयोजन बताया और यात्रा में शामिल युग सैनिकों का उत्साहवर्धन किया।

9 दिन में निःशुल्क साहित्य वितरण के अलावा नशामुक्ति, वृक्षारोपण, दीपयज्ञ, गोष्ठियाँ, विद्यालयों के अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। 15 सितम्बर को गाँव-गाँव सद्ज्ञान विस्तार का सफल अभियान सम्पन्न कर साइकिल यात्रा उमरसड़ पहुँची। वहाँ सभी युगसेनानियों का भावभरा सम्मान किया गया। कार्यकर्त्ता गोष्ठी भी हुई, जिसमें मोटर साइकिल यात्रा और झोला पुस्तकालयों के माध्यम से साहित्य विस्तार की योजनाओं पर चर्चा हुई।

तुलसी जयंती पर बाँटा साहित्य

मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)

23 अगस्त को सिटी पब्लिक स्कूल मैनपुरी तथा ब्राह्मण महासभा के संयुक्त तत्त्वावधान में गोस्वामी तुलसीदास जयंती मनायी गयी। इस अवसर पर मिशन के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री प्रकाश बाबू शुक्ल की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती प्रमिला कुमारी शुक्ला की पुण्य स्मृति में उपस्थित लगभग 1000 व्यक्तियों को युग साहित्य भेंट करते हुए गुरुवर के विचार लोगों तक पहुँचाय गये। स्व. श्रीमती प्रमिला कुमारी शुक्ला की स्मृति में छात्र प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ।

नया साहित्य स्टॉल

गन्नौर, सोनीपत (हरि.)

6 सितम्बर को गन्नौर में नये साहित्य स्टॉल का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर गायत्री महायज्ञ रखा गया। डॉ. गुरुदत्त अनेजा ने इसका संचालन करते हुए नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं से युग साहित्य विस्तार वर्ष में ज्ञानक्रांति के लिए विशेष सक्रियता अपनाने का आह्वान किया।

उच्च शिक्षण संस्थानों में युग साहित्य की स्थापना

लखनऊ (उत्तर प्रदेश) : गायत्री ज्ञान मन्दिर, इन्दिरा नगर द्वारा प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में वाङ्मय स्थापना का विराट अभियान जारी है। विगत दिनों श्री निखिल श्रीवास्तव ने अपने पूर्वजों की स्मृति में आसपास के क्षेत्रों को लाभान्वित करने के लिए वाङ्मय सेट की स्थापना करायी। श्रीमती अनुपमा यादव ने अपने स्व. पति श्री राजेश कुमार यादव की पुण्यस्मृति में फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग, जी.सी.आर.जी. ग्रुप, लखनऊ के पुस्तकालय में; डॉ. सुरभि चौहान ने इन्स्टीट्यूट ऑफ पॉलीटेक्निक, रामेश्वरम ग्रुप, लखनऊ में; श्रीमती निर्मला श्रीवास्तव एवं के.के. श्रीवास्तव ने इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन एण्ड ट्रेनिंग बी.एड., रामेश्वरम् ग्रुप, लखनऊ में; श्रीमती मधु श्रीवास्तव एवं डॉ. संतोष श्रीवास्तव ने इन्स्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी, रामेश्वरम् ग्रुप, लखनऊ में परम पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय साहित्य की स्थापना करायी। इनके साथ गायत्री ज्ञान मंदिर अब तक 238 पुस्तकालयों में युगऋषि का समग्र साहित्य स्थापित करा चुका है। सभी संस्थानों के विद्यार्थी और शिक्षण मण्डल के सदस्यों को निःशुल्क युग साहित्य दिया गया।

संस्थान के चेयरमैन श्री आर.पी. शुक्ला, महानिदेशक डॉ. एस.एन. त्रिपाठी, कार्यकारी निदेशक श्री अखिल शुक्ला एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी वाङ् मय साहित्य देखते हुए

अपराधियों को सजा सत्साहित्य पढ़ें, परीक्षा दें।

ईरान के न्यायाधीश कासीम नकीज़ादेह कर रहे हैं विशिष्ट प्रयोग

ईरान के गोन्बाद ए कावुस शहर के न्यायाधीश श्रीमान कासीम नकीज़ादेह द्वारा दोषियों को दी जा रही सजा इंटरनेट और सोशल मीडिया का चर्चित विषय रही है। वे किसी अपराध में दोषी पाये गये व्यक्ति को सजा के तौर पर पाँच पुस्तकें पढ़ने के लिए कहते हैं। उन्हें पढ़ना ही पर्याप्त नहीं, उन पुस्तकों में से पूछे गये किसी भी प्रश्न का सही उत्तर उस अपराधी को देना ही होगा, अन्यथा वे पुस्तकें उन्हें फिर से पढ़नी होंगी। इसके साथ ही उस अपराधी को दी गयी पुस्तकों का सार-संक्षेप लिखकर देना होता है। सजा पूरी होने पर वे पुस्तकें और उनका सार-संक्षेप अपराधी द्वारा कारागार को दान कर देना आवश्यक होता है, ताकि इस ज्ञान का लाभ अन्य बंदियों को भी मिल सके।

श्रीमान कासीम नकीज़ादेह ईरान में कानून में हुए संशोधन के आधार पर अपने विवेक का प्रयोग करते हुए यह सजा सुनाते हैं। नये संशोधन के अनुसार न्यायाधीश कुछ मामलों में अपराधियों को वैकल्पिक सजा देने में स्वतंत्र हैं। उनका मानना है कि सजा वही सार्थक है जो बंदी को सुधार की ओर अग्रसर करे। अच्छी पुस्तकों का ज्ञान निश्चित रूप से अपराधी मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। इससे परम्परागत शारीरिक सजाओं के कारण अपराधी और उनके परिवारी जनों की मानसिकता पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों से भी बचा जा सकता है।

परम पूज्य गुरुदेव का सूत्र वाक्य है-अच्छी पुस्तकें जीवंत देव प्रतिमाएँ हैं। इनकी आराधना से तत्काल प्रकाश उत्पन्न होता है।

गायत्री परिवार के परिजनों ने सैकड़ों बंदीगृहों में यह प्रयोग किया है और बंदियों की मानसिकता में आमूलचूल परिवर्तन करने में सफलता भी पायी है। यह गुरुदेव के कथन का जीवंत प्रमाण है।

समाज के विभिन्न वर्गों को युक्तिपूर्वक युग साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करने का अभियान तेज करना होगा। युग परिवर्तन का यही सर्वोत्तम आधार है।

पंजाब में युग साहित्य विस्तार का क्रांतिकारी अभियान

पटियाला (पंजाब)

■ डेढ़ माह चली शृंखला 48 बड़े स्तर के और 87 विद्यालयों में लगे पुस्तक मेले

पूरे पंजाब प्रांत में पुस्तक मेलों की एक शानदार शृंखला सम्पन्न हुई। 7 जुलाई से 22 अगस्त तक चली इस शृंखला में कुल 48 बड़े स्तर के और 87 विद्यालयों में पुस्तक मेले लगाये गये। 85 से 90 हजार लोगों के घर में परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी पहुँचाने में सफलता मिली। श्रीमती सुनीता शर्मा के अनुसार सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि सभी क्षेत्र नये थे। मात्र 9 ही स्थान ऐसे थे जहाँ गायत्री परिवार के परिजन थे।

ज्ञानयज्ञ की इस शृंखला के समापन के उपलक्ष्य में 22 अगस्त के पटियाला में एक बड़ा समारोह आयोजित किया गया। आयुर्वेदिक कॉलेज के प्राचार्य और आयुष के भूतपूर्व निदेशक डॉ. अश्विनी शर्मा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. एन.के. शर्मा, डॉ. रघुवीर, डॉ. पाठक, श्री नरेश जायसवाल-श्रम मंत्रालय दिल्ली आदि कई महानुभावों ने परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य की विशेषताओं की चर्चा की, उसे हर वर्ग के लिए प्रेरणादायी बताया।

पुस्तक मेलों की यह शृंखला सम्पन्न कराने में शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री सूरत सिंह अमरुते और लगभग 50 समयदानी भाइयों का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा।

हरियाणा में लगे 41 पुस्तक मेले

कैथल (हरियाणा)

गायत्री शक्तिपीठ कैथल द्वारा शिक्षण संस्थानों में पुस्तक मेलों के आयोजन का क्रम बड़ी सफलता के साथ चल रहा है। युग साहित्य विस्तार वर्ष के परिप्रेक्ष्य में इस शक्तिपीठ ने 12 सितम्बर तक 41 संस्थानों में पुस्तक मेले लगाये। इनके माध्यम से 20,000 घरों में परम पूज्य गुरुदेव की विचार-संजीवनी पहुँचाने में सफलता मिली। हर विद्यालय में बच्चों में नैतिक मूल्यों का समावेश करने और उन्हें बुरी लतों से बचाने के प्रयास भी किये गये।

मॉल में भी लोकप्रिय रहा पुस्तक मेला

आगरा (उत्तर प्रदेश) : दिनांक 21 से 30 अगस्त 2015 तक आगरा के कॉसमॉस मॉल, संजय पैलेस में विराट युग साहित्य पुस्तक मेला आयोजित किया गया। भव्य मॉल में प्रतिष्ठित गणमान्यों का ध्यान आकर्षित करने वाला देश का यह संभवतः प्रथम प्रयोग था, जिसकी सराहना मेले में उपस्थित हुए शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. बृजमोहन गौड़ और गायत्री तपोभूमि के प्रतिनिधि श्री आई.एस. पाण्डेय ने भी की।

पुस्तक मेले के आयोजन में नगर की सम्माननीय उद्योगपति एवं कॉसमॉस मॉल की स्वामिनी डॉ. रंजना बंसल एम.एस. का विशिष्ट योगदान था। उन्होंने ही अनेक उद्योगपति, मीडिया एवं गणमान्यों की उपस्थिति में पुस्तक मेले का उद्घाटन किया। परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि श्रद्धेय आचार्यश्री ने अपनी लेखनी से व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र का सुगम मार्गदर्शन किया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इन विचारों के विस्तार से निश्चित ही युग परिवर्तन होता दिखाई देगा। उल्लेखनीय है कि डॉ. बंसल ने ही इस पुस्तक मेले के लिए बिजली सहित निःशुल्क स्थान प्रदान किया था।

पुस्तक मेले ने आसपास से लेकर सुदूर क्षेत्रों से बड़े-छोटे विद्यालयों के प्रबंधक, शिक्षक, विद्यार्थी और समाज के हर वर्ग के गणमान्यों को आकर्षित किया। संयोजक श्री सी.एल. वर्मा ने विशिष्ट अतिथियों को गुरुदेव के साहित्य की विशेषताओं से अवगत कराया।

आगरा के कॉसमॉस मॉल में युग साहित्य देखते प्रबुद्धजन

विद्यार्थियों के चरित्र विकास के लिए

विद्यालयों में निरंतर बढ़ रही है पुस्तक मेलों की माँग

लखनऊ (उत्तर प्रदेश) : राजाजीपरम् क्षेत्र, लखनऊ के परिजनों के प्रयासों से पिछले शैक्षणिक वर्ष में 21 विद्यालयों के हजारों विद्यार्थियों तक परम पूज्य गुरुदेव के विचार पहुँचाये गये। प्रत्येक विद्यालय में दो दिवसीय पुस्तक मेलों के आयोजित किये गये। इन्हें विद्यालय प्रबंधन ने खूब सराहा, अपने पुस्तकालयों में भी गुरुदेव का साहित्य रखा और ऐसे पुस्तक मेले हर वर्ष आयोजित करने का अनुरोध आयोजकों से किया।

टी.डी. गर्ल्स इ. कॉलेज, लखनऊ

गोमती नगर की कार्यकर्त्ता श्रीमती माधुरी पाण्डेय विचार क्रांति के इस अभियान से अत्यंत प्रभावित हुईं। उन्होंने इस वर्ष अभियान को और गति देने के संकल्प के साथ पिछले जुलाई और अगस्त-दो माह में 8 विद्यालयों में पुस्तक मेले लगाये। ज्ञानक्रांति के इस अभियान में उनका पूरा महिला मण्डल और एल.डी.ए. कॉलोनी, कानपुर रोड़, आलमबाग क्षेत्र के श्री के.पी. सिंह भी सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

दिवंगत देवात्मा को भावभरी श्रद्धांजलि

श्रीमती कमला देवी बड़ेरिया

पटना (बिहार) : सन् 1966 से ही परम वंदनीया माताजी का विशेष स्नेह प्राप्त करते हुए मिशन की महती सेवा करने वाली अग्रणी कार्यकर्त्ता श्रीमती कमला देवी बड़ेरिया धर्मपत्नी श्री चंद्रदीप नारायण जी का 2 सितम्बर 2015 का 90 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। वे 23 वर्षों तक गायत्री शक्तिपीठ पटना की मुख्य ट्रस्टी रहीं।

भक्त का चरित्र ऊँचा नहीं हुआ तो पूजा करना निरर्थक है। पूजा, कीर्तन, रात्रि जागरण आदि तो अपने मन को धोने के साधन हैं, भगवान से जुड़कर अपनी पात्रता विकसित करने का उपाय है।

तरुपुत्र महायज्ञों के साथ धरती मैय्या को पहनाई हरी चूनर

351 सतपुड़ा की पहाड़ी पर

बुरहानपुर (मध्य प्रदेश) : सतपुड़ा पहाड़ी पर तरुपुत्र महायज्ञ सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार के प्रयासों से 351 दम्पतियों ने पौधों को गोद में लेकर वैदिक मंत्रों के बीच बड़ी श्रद्धा के साथ उनका पुत्ररूप में वरण किया और उनके पोषण-संरक्षण का वचन दिया। कार्यक्रम संयोजक श्री मनोज तिवारी के अनुसार इन पौधों को दो एकड़ भूमि पर रोपा गया।

विधायक सुश्री अर्चना चिटनीस वृक्षारोपण करते हुए

तरुरोपण से पूर्व शोभायात्रज्ञ

यह तरुपुत्र महायज्ञ शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री सुधीर भारद्वाज और श्री आशीष सिंह की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि विधायक सुश्री अर्चना चिटनीस ने भी अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि पौधा बेटा-बेटी के समान होता है। जनपद अध्यक्ष श्री किशोर पाटील, मंडल अध्यक्ष श्री मुकेश शाह, योगेश महाजन, किशोर कामठेसहित कई गणमान्य तरुपुत्र महायज्ञ में शामिल हुए। लगाये गये बड़, पीपल, नीम, आँवला, जामुन, आम आदि के पौधों के संरक्षण, सिंचन के लिए लालबाग में एक समिति गठित की गयी है।

1100 शाजापुर-सीहोर सीमा पर

शाजापुर (मध्य प्रदेश) : शाजापुर और सीहोर के कार्यकर्त्ताओं ने दोनों जिलों के सीमावर्ती गाँव-ऋषि अष्टावक्र की भूमि ग्राम बावड़ीखेड़ा में तरुपुत्र महायज्ञ सम्पन्न किया। इसके अंतर्गत कुल 1100 पौधे रोपे गये हैं। आसपास के 11 गाँवों के लोगों ने इसमें भाग लिया। उन्हें पौधों के सुविकास की व्यवस्थाएँ बनाने के लिए संकल्पित किया गया।

तरुपुत्र महायज्ञ में क्षेत्रीय विधायक श्री इंदर सिंह परमार सहित कई गणमान्य और श्रद्धालु उपस्थित थे। शाजापुर और सीहोर के कार्यकर्त्ताओं ने बारी-बारी से 15 दिन के अंतराल में जाकर लगाये गये पौधों की देखरेख करने का निर्णय किया है।

200 हरित सरोवर अभियान

सरायपाली, महासमुंद (छत्तीसगढ़) : बागबहरा ब्लॉक के वनवासी बहुल गाँव सरायपाली में 16 सितम्बर को समारोहपूर्वक हरित सरोवर निर्माण का कार्य आरंभ हो गया। गाँव के महामाया तालाब पर गाँववासियों ने एकत्रित होकर सर्वप्रथम तालाब के चारों ओर सफाई की। उसके बाद कँटीले तारों से उसका घेरा बनाया गया। तालाब के चारों ओर आँवला, पीपल, आम, जामुन, गुलमोहर जैसे 200 वृक्षों के पौधे लगाये गये। गाँव वालों ने ये पौधे अपने पूर्वजों की स्मृति में लगाये हैं और उनके संरक्षण का संकल्प भी लिया है।

यह गाँव आदर्श गाँव के लिए चयनित है। इस गाँव के हर घर में देवस्थापना हुई है। सर्वश्री सी.आर. यादव, बाबूराम साहू, हिरामन ठाकुर आदि ग्राम विकास के कार्यों में पूरी निष्ठा से जुटे हैं।

अकेले ही रोपे 1,30,000 पौधे

जीरापुर, राजगढ़ (म.प्र.)

मन में कुछ करने का संकल्प हो तो क्या नहीं किया जा सकता! जीरापुर निवासी नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री संजय कश्यप ने इसका जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत अकेले ही एक लाख तीस हजार पौधे रोपने में सफलता प्राप्त की है।

श्री संजय कश्यप पेशे से ऑटोमोबाइल मैकेनिक है। आजीविका उपार्जन के लिए उनका एक वर्कशॉप है। काम के समय वे वहाँ व्यस्त हो जाते हैं और शेष समय अपने जीवन के मुख्य ध्येय-युग निर्माण की गतिविधियों में लग जाते हैं।

- **16 वर्षों से चल रहा है वृक्षारोपण अभियान**
- **अपनी ही जमीन पर तैयार करते हैं पौधे**
- **इस वर्ष लिया 551 सीता अशोक के पौधे रोपने का संकल्प**

श्री संजय जी ने पिछले 16 वर्षों से हरीतिमा संवर्धन को ही समाज सेवा का प्रमुख माध्यम बना रखा है। उनके पास थोड़ी-सी भूमि है। साल के नौ माह तक वे वहाँ भूमि तैयार करने, बीजों का संग्रह करने और पौध तैयार करने में जुटे रहते हैं। जैसे ही बरसात आती है, उनका वृक्षारोपण अभियान आरंभ हो जाता है।

गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर के व्यवस्थापक श्री कन्हैयालाल शर्मा के अनुसार श्री संजय कश्यप ने जीरापुर और आसपास के 40 गाँवों में पिछले 16 वर्षों में 1,30,000 पौधे रोपे हैं। उनके द्वारा जामुन, नीम, कटहल, नीबू, अमलतास, बड़, गुलमोहर, बाँस, पीपल, शीशम, गूलर, आँवला, रुद्राक्ष एवं फूलों की 20 प्रजातियों के पौधे रोपे गये हैं। वृक्षारोपण के इच्छुक लोगों को वे पौधे उपलब्ध भी कराते हैं। वृक्षारोपण के बाद उनके सिंचन, संरक्षण की जिम्मेदारी भी गाँववालों को सौंपना नहीं भूलते।

इस वर्ष शांतिकुंज से सीता अशोक वाटिकाएँ लगाने के विशेष आह्वान को देखते हुए श्री संजय कश्यप ने ऐसे 551 पौधे रोपने का लक्ष्य रखा है।

नशा-दानव के विरोध में संघर्ष जारी है

तकनीकी महाविद्यालय में कार्यशाला

मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) : तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद से सम्बद्ध महाविद्यालय कॉलेज ऑफ कम्प्यूटिंग साइंसेज़ एण्ड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने युवा जागरण दिवस मनाते हुए 'नशामुक्त संसार' विषय पर कार्यशाला आयोजित की। मुख्य वक्ता के रूप में शांतिकुंज के युवा प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह और श्री मनीष चौर्या ने इसे संबोधित किया। उन्होंने जीवन के महान उद्देश्यों और आर्थिक युग के भटकावों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि नशे जैसे आदतों के कारण अपनी शक्तियों को क्षीण करना और झूठी शान दिखाने के बदले जीवन भर दुःखभरी जिंदगी जीना कहाँ की बुद्धिमानी है? उपस्थित 200 विद्यार्थियों को नशामुक्त जीवन जीने के संकल्प कराये गये। समाज को खोखला कर रहे नशा-दानव के विरुद्ध एक सशक्त अभियान चलाने का आह्वान भी उनसे किया।

विद्यार्थियों को संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि

कार्यशाला का शुभारंभ शांतिकुंज प्रतिनिधियों और कुलसचिव श्री देवादेश शर्मा, कॉलेज प्राचार्य डॉ. आर.के. द्विवेदी ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. अशेन्द्र कुमार सक्सेना, कार्यक्रम समन्वयक श्री प्रियांक सिंघल तथा राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के समन्वयक मो. जुबैर व सलीम खान भी उपस्थित थे।

नशा, जीवहत्या, प्रदूषण का विरोध

गिरिडीह (झारखंड) : प्रशासन और राजनेता गाँधीजी के व्यक्तित्व का प्रयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं। सत्तासीन लोगों और देशवासियों को गाँधीजी से सचमुच प्रेम है तो वे उनके अहिंसक और नशामुक्त समाज का सपना पूरा करें।

गायत्री परिवार के सदस्यों ने हिरोडीह थाना के उच्च विद्यालय प्रांगण में आयोजित जिला गोष्ठी में नशा, जीवहत्या और प्रदूषण के विरुद्ध आन्दोलन तेज करने का संकल्प व्यक्त करते हुए लोगों से उपरोक्त निवेदन किया। गोष्ठी में स्वस्थ समाज के निर्माण में आ रहे व्यवधानों पर चर्चा हुई। कहा गया कि नशा और जीवहत्या मनुष्य को हिंसा की ओर प्रेरित करते हैं। समाज में हो रहे भ्रष्टाचार, अनाचार, बलात्कार जैसे अपराधों के पीछे नशे की प्रवृत्ति और हिंसक मानसिकता का ही प्रमुख योगदान है। सर्वश्री कामेश्वर यादव, हरि यादव, अरुण कुमार, सुरेश यादव आदि ने पर्यावरण संवर्धन की योजना भी बनायी, संकल्प लिये।

रक्षाबंधन पर नशामुक्ति के संकल्प दिलाये

श्रीगंगानगर (राजस्थान) : विगत रक्षाबंधन पर्व पर राजस्थान के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्रालय ने 'तंबाकूमुक्त-शपथयुक्त' अभियान चलाया। गायत्री परिवार की श्रीगंगानगर शाखा ने इसमें भरपूर सहयोग दिया। कार्यकर्त्ता घर-घर गये और बहिनों को अपने भाई का जीवन सुधारने-सँवारने के लिए इस आशय का संकल्प दिलाने का अनुरोध किया। परिजनों ने सीधे भी तंबाकू या अन्य प्रकार का नशा करने वालों से चर्चा की। कुल 95 लोगों ने नशामुक्ति के संकल्प पत्र भरे।

दक्षिण में युग चेतना का प्रभाव

विशाखापटनम (आँध्र प्रदेश)

- **विश्व कल्याण के लिए किया 54 लाख गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान**

विशाखापटनम शाखा के कार्यकर्त्ताओं ने विश्व कल्याण में अपना भावनात्मक योगदान प्रदान करते हुए 54 लाख गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान सम्पन्न किया। विशाखापटनम के अलावा कुरुपम, चिन्नमेरंगी गाँव के परिजनों ने भी इसमें भागीदारी की।

सामूहिक साधना अनुष्ठान का शुभारंभ गुरुपूर्णिमा से हुआ। 9 अगस्त को 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ पूर्णाहुति की गयी। 700 लोगों ने यज्ञ में भाग लेते हुए यज्ञ भगवान को अपनी भावभरी आहुतियाँ समर्पित की। यज्ञ से पूर्व भव्य कलश यात्रा निकाली गयी। 300 बहिनों ने इसमें भाग लेते हुए युग निर्माणी आस्था, समाज सुधार और विश्वकल्याण की भावनाओं से पूरे क्षेत्र को सराबोर कर दिया। यज्ञ स्थल पर लगे साहित्य स्टॉल से लोगों ने 15000 रुपये का ज्ञान प्रसाद खरीदा। साधकों के आवास, भोजन और पूर्णाहुति महायज्ञ की सफलता में श्री जगदीश असोक और उनके परिवारी जनों ने तन, मन, धन से विशेष सहयोग दिया।

विशाखापटनम : अनुष्ठान की महापूर्णाहुति में भाग लेते साधकगण

बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षण

राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

- **शक्तिपीठ पर विद्यार्थियों की कोचिंग और महिला स्वावलम्बन प्रशिक्षण पिछले 12 वर्षों से चल रहे हैं।**

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव द्वारा 15 सितम्बर से शिक्षित बेरोजगारों एवं अशिक्षित युवाओं के स्वावलम्बन के लिए एक नये प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी। गायत्री मंदिर प्रांगण में दो पहिया वाहन की रिपेरिंग करने का कोर्स आरंभ किया गया है। प्रशिक्षण निःशुल्क दिया जायेगा।

शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री जुगलकिशोर लड्ढा के अनुसार शक्तिपीठ राजनांदगाँव पिछले 12 वर्षों से स्कूली विद्यार्थियों की कोचिंग और महिला स्वावलम्बन के लिए विविध प्रकार के निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। शासकीय कॉलेज के व्याख्याता और इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्यार्थियों की सेवाओं से जनसेवा का यह महान कार्य सम्पन्न हो रहा है।

नयी बाल संस्कार शाला आरंभ

अमलनेर, जलगाँव (महाराष्ट्र) : गायत्री प्रज्ञापीठ मुड़ी-बोदर्डे ने 15 अगस्त से नयी संस्कार शाला का शुभारंभ किया। जेड.डी. सोनवणे हाईस्कूल मुडी-बोदर्डे के प्रधानाध्यापक श्री अरविंद सूर्यवंशी के विशेष प्रोत्साहन और सहयोग से कक्षा 5 से 8 तक के 30 बालक और 36 बालिकाओं ने इसमें प्रवेश लिया। बाल संस्कार शाला शुभारंभ की स्मृति में प्रज्ञापीठ परिसर में वृक्षारोपण हुआ, 24 पौधे भी लगाये गये।

बहिनों से आत्मीयता पाकर नम हुई आँखें

हजारीबाग (झारखंड) : लोकनायक जयप्रकाश नारायण केन्द्रीय कारागार, हजारीबाग में संसीमित बंदियों की आँखें उस समय खुशी नम हो उठीं जब उनकी सूनी कलाई पर गायत्री परिवार की बहिनों ने आकर स्नेह सूत्र बाँधे। श्रीमती प्रतीमा देवी, मालती देवी, विनीता देवी, मनी देवी, लालती देवी, शारदा देवी, पम्मी देवी, उर्मिला देवी ने श्री राजेन्द्र प्रसाद भगत के साथ कारागार में जाकर बंदियों को राखी बाँधी। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में दीपयज्ञ के माध्यम से बंदियों के जीवन का अंधियारा मिटाने के प्रयास किये गये, देवदक्षिणा में नशे की लत से उबरने के संकल्प कराये गये। बंदियों के उज्ज्वल भविष्य की सामूहिक प्रार्थना की गयी।

कारा अधीक्षक श्री रूपम प्रसाद की मुख्य उपस्थिति में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उन्होंने कहा कि ऐसे सद्भावनापूर्ण प्रयासों से बंदियों के जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन देखे गये हैं।

उज्जैन महाकुंभ 'सिंहस्थ-2016' की तैयारी

प्रांतीय अर्धवार्षिक गोष्ठी में लिये गये समयदान-अंशदान के संकल्प

उज्जैन (मध्य प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में दिनांक 19, 20 सितम्बर को प्रांतीय अर्धवार्षिक गोष्ठी आयोजित हुई। जोन समन्वयक शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा जी ने गुरुसत्ता की नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं से अपेक्षाओं की याद दिलाते हुए कहा-युग निर्माणी के रोम-रोम से, वाणी से, कर्म में सत्संकल्प झलकना चाहिए। भगवान उन्हीं को माध्यम बनाते हैं जो सच्चे होते हैं, उन्हें ही आत्मज्ञान प्राप्त होता है। एक गोष्ठी में गुरुदेव ने कहा था-बेटा! अब मैं हवा होने जा रहा हूँ। सांस के साथ मेरी प्रेरणा, प्रोत्साहन और प्रेम सबको मिलेगा। नाम किसी का भी हो, पर सबको मेरा (युग निर्माण) ही करना पड़ेगा।

मध्य जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री विष्णुभाई पण्ड्या ने भी इस गोष्ठी को संबोधित करते हुए लोगों को यज्ञभाव को सार्थक करते हुए अपने समय, संपदा को उदारतापूर्वक लोकहित में लगाने के संकल्प लेने की प्रेरणा दी।

- **600 परिजन करेंगे समयदान**
- **श्री राजेश तंवर ने 25 लाख रुपयों के ज्ञानयज्ञ का संकल्प लिया**
- **अगली प्रांतीय गोष्ठी फरवरी-16 में जबलपुर में होगी।**

प्रांतीय गोष्ठी में सिंहस्थ-2016 में ज्ञान विस्तार के संदर्भ में मुख्य रूप से चर्चा हुई, संकल्प उभरे। 600 से अधिक व्यक्तियों ने समयदान करने के संकल्प लिये। ज्ञानक्रांति को समर्पित प्रज्ञापुत्र कसरावद के श्री राजेश तंवर ने ज्ञान विस्तार के लिए 25 लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा की। 4 लाख रुपये के व्यक्तिगत अनुदान के संकल्प लिये गये। एक ट्रक चावल, 50 क्विण्टल पोहा, 500 क्विण्टल गैंहूँ, दाल एवं हवन सामग्री दान की घोषणा हुई।

ग्रामीण अंचल के नारी जागरण सम्मेलन

खरगोन (मध्य प्रदेश)

शक्तिपीठ खरगोन पर 13 सितम्बर को विशाल नारी जागरण सम्मेलन आयोजित हुआ। सुश्री प्रज्ञा पाराशर, श्रीमती लक्ष्मी उपाध्याय आदि बहिनों ने इसे संबोधित करते हुए कहा कि जिन घरों में पंचशीलों का पालन होता है, उन घरों में स्वर्ग जैसा वातावरण बन जाता है। उन्होंने कहा कि 'मधुरता' नारी के लिए उत्कृष्ट कोटि का सौन्दर्य है। उपस्थित बहिनों को गायत्री मंत्र साधना, दैनिक यज्ञ, बलिवैश्व आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी।

इससे पूर्व 11 सितम्बर को प्रज्ञापीठ मोठापुरा में भी नारी जागरण सम्मेलन हुआ। इसमें 18 गाँवों की सैकड़ों बहिनों ने भाग लिया। जिला संयोजिका श्रीमती सुनीता पाटीदार ने 'रसोई घर से स्वास्थ्य संरक्षण' के नुस्खे बताये। शांतिकुंज में जीवनदानी बहिन श्रीमती ममता पाटीदार का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

विश्व हिंदी सम्मेलन में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की भागीदारी

भोपाल (मध्य प्रदेश)

राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरव बढ़ाने के लक्ष्य के साथ 10 से 12 सितम्बर 2015 की तारीखों में भोपाल में विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ। इस प्रतिष्ठित सम्मेलन का उद्घाटन प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया, समापन सत्र की अध्यक्षता केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने की। देव संस्कृति विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने किया।

हिन्दी सम्मेलन का विषय था-हिन्दी जगत् : विस्तार एवं सम्भावनाएँ। यह 16 सत्रों में सम्पन्न हुआ। डॉ. सिंह ने 'हिन्दी पत्रकारिता में भाषा की शुद्धता' आलेख प्रस्तुत किया। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में हिन्दी वाले सत्र में इंटरनेट में उपलब्ध करायी जाने वाली सामग्री की प्रामाणिकता एवं भाषा के मानकीकरण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता का सुझाव दिया। हिन्दी एवं इतर राज्यों में भारतीय भाषाओं के विकास-विस्तार के लिए पत्र-पत्रिकाओं व शिक्षकों की सहभागिता हो, ऐसा सुझाव सत्राध्यक्ष के समक्ष रखा, जो अनुशंसा के निमित्त स्वीकार किया गया।

देव संस्कृति विवि. के प्रतिनिधि डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह अपने विचार व्यक्त करते हुए

डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने डॉ. नरेन्द्र कोहली, डॉ. गोयंका, प्रो. एस.एस. शेषारत्नम् आदि कई प्रमुख साहित्यकारों से हिन्दी के विकास-विस्तार पर महत्त्वपूर्ण चर्चा की।

शक्तिपीठ पर हुई उज्जैन जिले के सरपंच-सचिवों की कार्यशाला

संभागायुक्त डॉ. पस्तोर सरपंचों को संबोधित करते हुए

अलक्ष्मी (सोना, चांदी, रुपया) के चक्कर में गाँव की लक्ष्मी (अन्न, वस्त्र, फल, दूध) का गाँव से बाहर जाना दुर्भाग्यपूर्ण है।
- श्री कालीचरण शर्मा, शांतिकुंज प्रतिनिधि

उज्जैन (मध्य प्रदेश)

जिला पंचायत उज्जैन एवं गायत्री परिवार उज्जैन के संयुक्त प्रयासों से उज्जैन जनपद स्तरीय सरपंच एवं सचिवों की कार्यशाला आयोजित की गयी। संभागायुक्त डॉ. रवीन्द्र पस्तोर ने मुख्य अतिथि के रूप में इसे संबोधित करते हुए पंच-सरपंचों को अपने ग्राम विकास के प्रति जागरूक किया, इससे संबंधित बहुमूल्य सूत्र बताये। उन्होंने कहा कि उज्जैन संभाग प्रगतिशीलता के मामले में मध्य प्रदेश का अर्ली एडॉप्टर है। आपको भी अपनी पंचायत को अर्ली एडॉप्टर बनाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने ग्राम विकास के लिए ऑर्गेनिक खेती, बायोगैस, नेडेप खाद, बीज समिति, दूध समिति जैसी अनेक योजनाओं को लागू करने की प्रेरणा और परामर्श दिये। उन्होंने गायत्री परिवार के परिजनों को ऐसी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए दीपयज्ञ, प्रभातफेरी जैसे कार्यक्रमों से वातावरण बनाने का अनुरोध किया।

कार्यशाला में शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा, श्री विष्णुभाई पण्ड्या एवं श्री जी.एस. पाराशर ने भी भाग लिया। श्री कालीचरण शर्मा जी ने कहा-अन्न, फल, वस्त्र, दूध आदि को भारतीय संस्कृति में लक्ष्मी कहा गया है। इनका उत्पादन गाँवों में होता है, परंतु आज देश स्वतंत्र होते हुए भी गाँव अलक्ष्मी-सोना, चाँदी, रुपया-पैसा के चक्कर में अपनी लक्ष्मी को अपने पास नहीं रखते। देश के गाँव शहरों पर निर्भर हैं, यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

श्री कालीचरण शर्मा जी ने ग्राम विकास के संदर्भ में रालेगण सिद्धि और हिवरे बाजार का उदाहरण दिया। 2280 एकड़ भूमि की सिंचाई रालेगण सिद्धि के एक ही कुँए से होती है। उन्होंने उपस्थित सरपंचों को अपने गाँव के विकास के ऐसे ही प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यशाला को जलसंरक्षण विशेषज्ञ श्री योगेन्द्र गिरि, बाँसखेड़ी के सरपंच श्री राजेश प्रजापति, सचिव संघ के अध्यक्ष श्री प्रवीण शर्मा, गायत्री परिवार के उपजोन प्रभारी पं. पुरुषोत्तम दुबे ने भी संबोधित किया। उज्जैन जनपद की 86 पंचायतों के प्रतिनिधि, संयुक्त आयुक्त श्री प्रतीक सोनवलकर, सीईओ जिला पंचायत उज्जैन श्री उईके आदि कार्यशाला में उपस्थित थे।

अपनी कला से बदल रहे हैं समाज की दिशा

फलौदी, जोधपुर (राजस्थान)

कारण रूप में विद्यमान परम पूज्य गुरुदेव की चेतना जाग्रत् आत्माओं में कमाल का उत्साह जगा रही है। इसी का जीता-जागता उदाहरण है फलोदी निवासी डॉ. बालकिशन नागल की सक्रियता। उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में समाज में जो कार्य किये हैं, उनका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

1008 सद्वाक्य लेखन
108 विद्यालयों में नैतिक शिक्षा संदेश
जगह-जगह योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

डॉ. बालकिशन नागल एक चित्रकार और प्राकृतिक चिकित्सक हैं। वे समाज निर्माण के लिए अपनी कला का बखूबी उपयोग कर रहे हैं। नशामुक्ति और स्वास्थ्य के लिए वे निम्न गतिविधियों में निरंतर सक्रिय रहते हैं।

1. दीवारों पर 1008 सद्वाक्य लिखने का उनका संकल्प है, जिसे आधे से ज्यादा वे पूरा कर चुके हैं। एक चित्रकार की कला मिशन के क्रांतिकारी विचारों को और भी प्रभावशाली बना देती है। इन वाक्यों को पढ़कर लोगों के विचार बदल रहे हैं, बच्चों में संस्कार जाग रहे हैं। इस आशय की जानकारी लोग स्वयं उन्हें देते हैं। लोग स्वयं डॉ. नागल को बुलाकर उनसे अपने घर की दीवार पर सद्वाक्य लिखने का आग्रह करते हैं।

2. 108 विद्यालयों में नैतिक शिक्षा और नशामुक्ति का संदेश देने का अभियान डॉ. बालकिशन जी ने चला रखा है। 29 अगस्त-रक्षाबंधन से अभियान का शुभारंभ करते हुए वे 15 सितम्बर तक 13 विद्यालयों में ऐसे कार्यक्रम दे चुके हैं। स्व-चित्रांकित प्रदर्शनी के प्रभाव से इन 13 विद्यालयों के 2000 से अधिक विद्यार्थियों से उन्होंने नशा न करने या नशा त्यागने का संकल्प पत्र भरवाने में सफलता अर्जित की है।

3. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक होने के नाते विभिन्न विद्यालय स्वयं उन्हें आमंत्रित कर बच्चों को स्वास्थ्य संबंधी प्रेरणा और योग का प्रशिक्षण दिलाते हैं। समाज में भी ऐसे शिविर लगाये गये। इन शिविरों को माताएँ-बहिनें खूब पसंद करती हैं। तुलसी रोपण और तुलसी सेवन से रोग निवृत्ति पर उनका विशेष ध्यान होता है।

8 सितम्बर 2015 को सेन युवा सेवा समिति फलौदी द्वारा योग एवं प्राणायाम शिविर लगाया गया। आसपास के कई गाँवों के सैन समाज के लोगों ने इसका लाभ लिया। वयोवृद्ध तक सूक्ष्म व्यायाम के प्रभाव से स्वास्थ्य लाभ की अनुभूति करते दिखाई दिये।

विदेशी मेहमानों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली

भीमताल, नैनीताल (उत्तराखंड)

भीमताल के होटेल नीलेश में विदेशी सैलानियों का एक दल ऋषि संस्कृति के अध्ययन की अभिलाषा से आया था। उनका परिचय गायत्री शक्तिपीठ हल्दूचौड़ के कार्यकर्त्ताओं से कराया गया। उन्होंने अतिथि समूह को भारतीय संस्कृति की मौलिक विशेषताओं की विस्तार से जानकारी दी तो उनमें गायत्री मंत्र की दीक्षा लेने और यज्ञोपवीत संस्कार कराते हुए इस देव संस्कृति को जीवन में धारण करने की उमंग उठी। उनकी इच्छा के अनुरूप संस्कार कराया भी गया।

- **स्लोवाकिया, यूक्रेन, कनाडा, अमेरिका, न्यूज़ीलैण्ड और रूस के नागरिकों ने ली दीक्षा**

दीक्षा एवं यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन भीमताल की मनोरम झील के तट पर किया गया। स्लोवाकिया के जान जेवोरिक, यूक्रेन के ओलैक्सान्द्रे सालिरोन, कनाडा के जस्टिन जागोश, अमेरिका के सैण्डी अल्मान एवं गिया लिया, न्यूज़ीलैण्ड की रोज़ी गुल्हान तमान, रूस की स्वेत्ना मोरोज़ोवा एवं नातालिया फेडोरोवा सहित 22 विदेशी एवं भारतीय गणमान्यों ने दीक्षा ली। पुरुष धोती पहनकर और महिलाएँ साड़ी पहनकर कंधे पर गायत्री मंत्र की चादर डाले यज्ञ करते हुए अलौकिक दिव्यता की अनुभूति करते दिखाई दिये। शक्तिपीठ हल्दूचौड़ के श्री हरिदत्त सती एवं श्री रघुवंश दुबे ने कर्मकाण्ड कराया और श्री अशोक फर्सवान ने अंग्रेजी में व्याख्या कर एक-एक क्रिया का आध्यात्मिक-वैज्ञानिक आधार समझाया।

गायत्री महाविद्या को जीवन में धारण करने के लिए दीक्षित हुए ये देशी-विदेशी गणमान्य नियमित उपासना, स्वाध्याय, यज्ञ, बलिवैश्व जैसी क्रियाओं के साथ ऋषि संस्कृति को अपनाने के लिए संकल्पित हुए हैं।

राष्ट्र निर्माता गुरुजनों का अभिनंदन

जन्म दिवस पर करेंगे सम्मान वर्षभर चलता रहेगा अभियान

शाजापुर (मध्य प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ शाजापुर ने शिक्षक दिवस से शिक्षकों के अभिनन्दन की अनूठी योजना आरंभ की है। इसके अंतर्गत वर्षभर शिक्षक-सम्मान का क्रम बना रहेगा। श्री शैलेन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता नगर के निजी और शासकीय सभी विद्यालयों के शिक्षकों के जन्मदिन पर उन्हीं के विद्यालय में जाकर जन्मदिन मनाते हुए उनका सार्वजनिक अभिनंदन करेंगे। एक युग निर्माता के रूप में उन्हें सम्मान पत्र एवं युग साहित्य प्रदान किया जायेगा।

अभियान का शुभारंभ शिक्षिका सुफिया शमा के सम्मान के साथ हुआ। उन्हें उनके महूपुरा स्थित विद्यालय में जाकर सम्मानित किया गया।

शिक्षक दिवस मनाया

अमलनेर, जलगाँव (महाराष्ट्र)

गायत्री प्रज्ञापीठ मुड़ी-बोदर्डे ने शिक्षक दिवस पर शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित किया। गायत्री परिवार के श्री राजमल बोरसे ने इस अवसर पर अध्यापकों के कौशल और विद्यार्थियों के कर्त्तव्यों की चर्चा की। प्रधानाध्यापक श्री अरविंद हिम्मतराव पाटिल एवं उनके सहयोगी शिक्षकों के अलावा मंचासीन गणमान्य अध्यापकों का सम्मान किया गया।

शिक्षक और विद्यार्थियों का सम्मान

निवाली, बड़वानी (मध्य प्रदेश)

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा तहसील निवाली का पुरस्कार वितरण एवं शिक्षक सम्मान समारोह शा. कन्या उ.मा. विद्यालय में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि कस्तूरबा आश्रम की संचालक सुश्री पुष्पा जी ने भासंज्ञाप. को प्रोत्साहित करते हुए समाज के नवनिर्माण में अपना योगदान देने वाले शिक्षक-विद्यार्थियों को सम्मानित किया। उन्होंने नयी पीढ़ी में नैतिकता संवर्धन के गायत्री परिवार के प्रयासों की भरपूर प्रशंसा की।

श्री गोपाल कृष्ण प्रजापति ने युग निर्माण के महान कार्य में सहयोग के लिए शिक्षकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने परीक्षा के अलावा नैतिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए समानांतर गतिविधियाँ चलाने का आह्वान भी शिक्षकों से किया।

श्री महेन्द्र भावसार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि कानूनी डंडे की अपेक्षा उभरती पीढ़ी को नैतिक गुण सम्पन्न बनाकर समाज को बदलना अधिक सरल और अधिक प्रभावशाली है, जिसे शिक्षक ही भलीभाँति पूरा कर सकते हैं।

समारोह में वरीयता प्राप्त 24 विद्यार्थियों को निर्धारित नकद राशि, प्रमाणपत्र, युग साहित्य आदि प्रदान कर सम्मानित किया गया। तहसील संयोजक श्री भूरालाल वाणी ने 70 शिक्षक-शिक्षिकाओं को प्रशस्ति पत्र, पेन और युग साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया।

पढ़ने और आगे बढ़ने के लिए बेटी ने उठाये साहसी कदम

प्रतिष्ठित अमेरिकी पत्रिका 'ग्लैमर' ने किया सम्मानित

बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)

ऋषिसत्ता के संकल्प के अनुरूप दिन पर दिन रूढ़ियाँ टूट रही हैं, प्रगतिशील मानसिकता का सम्मान हो रहा है। समाज निरंतर प्रगति की ओर कदम बढ़ा रहा है।

कहानी है बलरामपुर की बेटी शबनम खातून की। लखनऊ से प्रकाशित दैनिक जागरण के 23 अगस्त के समाचार के अनुसार इस बच्ची ने अभिभावकों से विद्रोह कर अपनी पढ़ाई जारी रखने का साहस दिखाया। श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने के शबनम के साहस भरे कदम अमेरिका की पत्रिका 'ग्लैमर' को भा गये। पत्रिका ने शबनम की साहस-गाथा को अपनी पत्रिका में स्थान देने का मन बनाया।

शबनम कन्या उ.मा. विद्यालय पचपेड़वा में इंटरमीडिएट की छात्रा है। 11 वर्ष की उम्र में 5वीं पास करने के बाद उसके माता-पिता ने पढ़ाई छोड़कर घर के कामों में ध्यान देने का निर्देश दिया। वह पढ़ना चाहती थी। अतः अपने गाँव में आयी स्वयं सेवी संस्था केअर इंडिया की सदस्य फरीदा से उसने संपर्क किया और कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय में प्रवेश लेने की इच्छा व्यक्त की। फरीदा के समझाने पर भी जब उसके अभिभावक नहीं माने तो वह स्वयं ही केजीवीबी, विशुनपुर टनटनवा पहुँच गयी। वहाँ प्रवेश लिया और पढ़ाई आरंभ कर दी। उसका खर्च फरीदा ही उठाने लगी। शबनम छुट्टियों में भी अपने घर न जाकर अपने सहपाठियों के घर जाया करती थी।

शबनम की साहसी पहल से 'ग्लैमर' के प्रकाशक बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने इस कहानी को प्रकाशित करने का मन ही नहीं बनाया, बल्कि स्कूल से वंचित बालिकाओं को आवासीय शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए उसने 'केअर इंडिया' को डॉलर 31,500 (लगभग 20 लाख 50 हजार रुपये) फण्ड भी दिया है।

संकलन : श्री राधेश्याम अग्रवाल, बहराईच

अभिभावक की दृष्टि से विद्यार्थियों का विकास करें शिक्षक

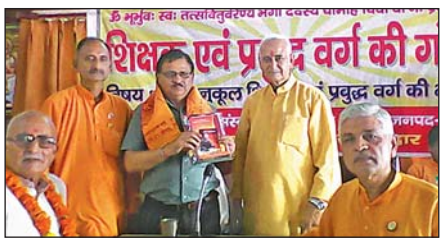

बागपत (उत्तर प्रदेश)

बच्चों के सर्वांगीण विकास में अध्यापकों की महती भूमिका होती है। किताबी ज्ञान देने के अलावा उन्हें अपने विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक लगाव भी रखना चाहिए, उन्हें हर पल संवेदना, सहनशीलता, सेवा जैसे अच्छे गुण और संस्कार देने की चेष्टा करनी चाहिए। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में ही समाज और राष्ट्र का विकास निहित है।

बागपत के श्री यमुना इंटर कॉलेज में आयोजित शिक्षक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा ने यह संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने व्यक्तित्व विकास में गायत्री मंत्र के प्रभाव की भी विस्तार से चर्चा की। कविता, निबंध, चित्रकला जैसी प्रतियोगिताओं और खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों के रचनात्मक ज्ञान और कौशल में निरंतर वृद्धि करते रहने की प्रेरणा भी दी।

संगोष्ठी को गायत्री परिवार के अन्य कुछ और वक्ताओं ने भी संबोधित किया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के बताये 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' सूत्र को जीवन मंत्र बनाने की प्रेरणा दी। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री गणेश पंवार के प्रेरणाप्रद प्रज्ञागीत एवं बाँसुरी वादन ने भी शिक्षकों को सृजनात्मक प्रेरणाएँ दीं। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री जयपाल शर्मा, सर्वश्री ओमपाल शर्मा, कंवरपाल, खड़क सिंह आदि अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

विदेश समाचार

पर्वों ने बिखेरी संस्कृति की सुगंध

राष्ट्र-वंदन के साथ स्वास्थ्य संवर्धन और पर्यटन का आनंद

वेस्टर्न ओंटारियो (कनाडा)

गायत्री परिवार वेस्टर्न ओंटारियो ने स्वतंत्रता दिवस-15 अगस्त अत्यंत प्रेरक और मनोरंजक अंदाज में मनाया। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री जितेन्द्र मिश्र, श्री हरिप्रसाद चौधरी, श्री छबिलाल गढ़िया की मुख्य उपस्थिति में पुसलिंक टाउन के मोरिसन पार्क में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। वेस्टर्न ओंटारियो के अलावा टोरंटो शाखा और दिया कनाडा से जुड़े 80 परिजनों ने इसमें भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ आसन, प्राणायाम के अभ्यास के साथ हुआ। इसका समापन लॉफिंग योग से हुआ। समग्र कार्यक्रम अत्यंत आत्मीयता और आनन्द प्रदान करने वाला था।

भारत के स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में बाल संस्कार शाला सहित समस्त परिजनों द्वारा बड़े उत्साह के साथ ध्वजारोहण और उसके बाद राष्ट्रगान किया। शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने अपने संदेश और देशभक्ति गीतों से सभी को भावविभोर कर दिया। तत्पश्चात् हाथों में तिरंगा और कनाडा का ध्वज लेकर किये गये सामूहिक मार्चपास्ट का नज़ारा देखते ही बनता था।

दिनभर ज्ञान और उत्साहवर्धक गतिविधियाँ चलती रहीं। अपने-अपने वर्गों में खेल हुए। बहिनों ने मिलकर भोजन बनाया और सबके साथ उसका लुत्फ उठाया। इस अवसर पर श्री अल्पेश मोदी का जन्मदिवस भी बड़े धूमधाम से मनाया गया।

श्रावण में रुद्राभिषेक करने और जन्माष्टमी पर्व मनाने के लिए गायत्री चेतना केन्द्र पिस्काटवे पर उमड़ा जनसैलाब

पिस्काटवे, न्यूजर्सी (अमेरिका)

भारतीय समुदाय की आस्था के अद्वितीय केन्द्र, गायत्री चेतना केन्द्र पिस्काटवे पर श्रावणी सोमवार के दिनों में श्रद्धा का सैलाब उमड़ता रहा। प्रत्येक सोमवार को 300 से 400 श्रद्धालुओं की उपस्थिति में महारुद्राभिषेक के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। शांतिकुंज से हाल ही में पहुँचे परिव्राजक दम्पति श्रीमती गीता-राजेश भावसार ने रुद्राभिषेक के साथ शिव का दर्शन समझाते हुए लोगों को आत्मसुधार की प्रेरणाएँ प्रदान की। उन्होंने कहा कि सृजेता की सृष्टि में संतुलन स्थापित करने में सहयोगी बनना सच्ची शिवभक्ति है। महाकाल स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव ने हम सबसे यही अपेक्षाएँ रखी हैं।

जन्माष्टमी पर्व पर चेतना केन्द्र का वातावरण उल्लास से भर उठा। 600 श्रद्धालुओं ने समारोह में भाग लिया। श्रीमती वर्षा जोशी के ग्रुप ने भक्तिगीत, रास-गरबा प्रस्तुत करते हुए श्रद्धालुओं के अंतस में भक्तिभाव का संचार किया।

एशिया टीवी ने दोनों ही कार्यक्रमों का प्रसारण कर गायत्री परिवार के दर्शन और विचारों से हजारों लोगों को लाभान्वित किया।

गायत्री चेतना केन्द्र, पिस्काटवे पर महाकाल का अभिषेक कर रहे परिव्राजक एवं श्रद्धालु

अवांछनीयताओं के प्रतिकार की प्रेरणा दे गया जन्माष्टमी पर्व

लेनेसिया, जोहनिसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका)

गायत्री आश्रम लेनेसिया में दीपमहायज्ञ के साथ जन्माष्टमी का पावन पर्व मनाया गया। शांतिकुंज के परिव्राजक दम्पति श्रीमती ज्योत्सना एवं श्री प्रकाशभाई मोदी ने गीता-संदेश की प्रासंगिकता बतायी। उन्होंने कहा कि युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन गीता का जीवंत स्वरूप है। उनके विचारों के अनुरूप जीवन जीना सच्ची कृष्ण भक्ति है। अराजकता एवं आतंक से संघर्ष करने के लिए हर भावनाशील को आगे आना ही चाहिए।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में 3 से 5 सितम्बर तक नित्य सायंकाल भजन संध्या हुई। स्वामिनारायण सम्प्रदाय के 20 युवाओं का इसमें विशेष योगदान रहा। गोसंवर्धन, आत्मीयता विस्तार, अनीति के प्रतिकार से जुड़े भगवान श्रीकृष्ण के जीवन प्रसंगों के साथ भगवान का जन्मोत्सव मनाया गया। मुख्य पूजन श्री निर्मल-श्रीमती भाविनी तथा श्री भुवन-रोशनी दम्पति ने किया।

लॉस एंजिल्स (अमेरिका)

गायत्री चेतना केन्द्र लॉस एंजिल्स में जन्माष्टमी पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शांतिकुंज परिव्राजक श्री शांतिलाल पटेल ने पर्व का कर्मकाण्ड सम्पन्न कराते हुए भगवान श्रीकृष्ण के जीवन प्रसंगों की मार्मिक व्याख्या की। उन्होंने कहा कि गोपियों का रास हो या माखन चोरी, हर घटना एक आन्दोलन है, जो सामयिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। आज की समस्याओं के समाधान के लिए भी ऐसे ही युक्तिसंगत प्रयास हो रहे हैं, महाकाल की युग निर्माणी योजना में सहयोगी बनने में ही हमारी समझदारी है।

रेडियो फ़ीजी ने प्रसारित किया गायत्री परिवार का संदेश

श्री हेमलाल तत्त्वदर्शी

इन दिनों फ़ीज़ी में सक्रिय शांतिकुंज के परिव्राजक श्री हेमलाल तत्त्वदर्शी की वार्ता और गीतों का राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारण हुआ। श्री रिवनेश सिंह और सुश्री पायल जी द्वारा लिये गये साक्षात्कार में शांतिकुंज प्रतिनिधि ने परम पूज्य गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की विस्तार से जानकारी दी। गायत्री और यज्ञ का तत्त्वदर्शन समझाते हुए उन्होंने बताया कि यह लोगों की विचारधारा और व्यवहार को बदलकर कैसे आज की समस्त समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। यह प्रसारण गायत्री चेतना विस्तार की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। अनेक लोगों ने शांतिकुंज प्रतिनिधि से सम्पर्क कर इस संदर्भ में जानकारी प्राप्त की।

प्रज्ञा अभियान
16 अक्टूबर 2015

बदलती दुनियाँ के अनचाहे तनाव से बचाता है योग

पश्चिमी कमान के सैन्य अधिकारियों के बीच आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का व्याख्यान

हमारे जवानों की सेवा और देशभक्ति को सारा देश नमन करता है। यह उनकी अनन्य निष्ठा और समर्पण का ही परिणाम है। लेकिन आज के आर्थिक युग की अंधी दौड़, बच्चों का भविष्य, घर की परिस्थितियाँ, पारिवारिक तालमेल जैसे कारणों से जवानों को न जाने कितने प्रकार के तनावों का सामना करना पड़ता है, जो उनकी कार्य दक्षता और सेवा भावना को निश्चित रूप से प्रभावित करते हैं। सेना शारीरिक कार्यदक्षता वृद्धि के लिए तो सजग रहती है, लेकिन जवानों को अनचाहे तनाव से बचाने का प्रबंध न किया गया तो उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होगी ही।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 'तनाव प्रबंधन, सैन्यबल के विशेष संदर्भ में' विषय से सैन्य अधिकारियों को संबोधित करते हुए उपरोक्त विचार रखे। पश्चिमी कमान के सैन्य अधिकारियों के लाभार्थ उनका यह व्याख्यान दिनांक 18 सितम्बर को पश्चिमी कमान मुख्यालय चण्डी मंदिर में आयोजित हुआ।

लै.जनरल के.जे. सिंह, अतिविशिष्ट सेवा पदक (3 बार) जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ, मुख्यालय पश्चिमी कमान चण्डी मंदिर द्वारा आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया था। पिछले कुछ ही दिनों में सेनाधिकारियों के बीच उनका यह पाँचवा व्याख्यान था। सैन्य अधिकारियों द्वारा उनके व्याख्यानों का अत्यंत सकारात्मक प्रभाव अनुभव किया जा रहा है, जिसे देखते हुए सैन्य अधिकारियों के बीच लगातार व्याख्यान के आमंत्रण शांतिकुंज प्रतिनिधि को प्राप्त हो रहे हैं।

पावर पॉइण्ट के माध्यम से आदरणीय डॉ. साहब ने तनाव के कारण शरीर की नस-नाड़ियों में होने वाले बदलाव, शरीर और मन पर पड़ने वाले प्रभावों की विस्तार से जानकारी दी। इस संदर्भ में उन्होंने देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा जवान से लेकर जेसीओ तक के 60 सेना कर्मियों पर की गयी शोध के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि तनाव जीवन के विकास के लिए आवश्यक है, लेकिन उसका सही प्रबंधन न हो पाने के कारण वह अभिशाप बन जाता है।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से आध्यात्मिक जीवन शैली के सूत्रों को समझते सेना के अधिकारी

- पिछले दो वर्षों में सेना के अधिकारियों के बीच आदरणीय डॉ. साहब का यह पाँचवा व्याख्यान था
- तनाव के कारण, उसके वैज्ञानिक प्रभाव तथा बचाव के लिए जीवन शैली में परिवर्तन के सूत्रों की विस्तार से जानकारी दी

व्यक्ति की नासमझी ही जीवन के लिए हानिकारक तनावों को जन्म देती है। आहार-विहार में बदलाव, सकारात्मक चिंतन, सृजनात्मक सोच, जीवन में आस्तिकता के समावेश से इससे बचा जा सकता है।

योग तनाव प्रबंधन का अत्यंत प्रभावशाली उपाय है, यह देव संस्कृति विवि. की शोधों ने भी प्रमाणित किया है। आसन, प्राणायाम, ध्यान से मानसिक संतुलन और धैर्य बढ़ता है। उपासना, साधना, आराधना से जीवन में प्रेम और सद्भाव का विकास होता है, जो व्यक्ति को तनावों से दूर रखने में बड़ा सहायक होता है।

आदरणीय डॉ. साहब के मार्गदर्शन का सैन्य अधिकारियों ने करतल ध्वनि के साथ स्वागत किया। इससे पूर्व लै.जनरल के.जे. सिंह की ओर से शांतिकुंज प्रतिनिधि का स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया। शांतिकुंज की ओर से भी आदरणीय डॉ. साहब ने शांतिकुंज की ओर से उन्हें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश देता स्मृति चिह्न और युग साहित्य प्रदान किया। शांतिकुंज प्रतिनिधि कर्नल उदय मिश्रा ने व्याख्यान के आयोजन में अहम योगदान दिया।

एक महान अध्येता-स्वामी दयानंद सरस्वती को भावभीनी विदाई

भारतीय अध्यात्म का एक दैदीप्यमान सितारा दिनांक 23 सितम्बर को बुझ गया। आर्ष विद्या गुरुकुलम् के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती अपनी जीवन लीला समाप्त कर सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये। उन्हें अपना अभिभावक-मार्गदर्शक मानने वाले अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी उनके महाप्रयाण के पश्चात् श्रद्धांजलि देने दिनांक 24 को ऋषिकेश स्थित उनके आश्रम पहुँचे। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी भी उनके साथ थे।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने स्वामी जी को श्रद्धा सुमन समर्पित करते समय कहा कि मुक्तात्मा, संत, महापुरुष कभी मरते नहीं। वे अपने ज्ञान के रूप में सदैव अमर रहते हैं। स्वामी जी संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान और वेदान्त के एक आदर्श शिक्षक थे। सांस्कृतिक चेतना के संवाहक के रूप में उन्होंने पूरे विश्व का पथ प्रशस्त किया है। देश और संस्कृति को अनेक हीरे प्रदान किये हैं।

आदरणीय डॉ. साहब स्वामी दयानंद सरस्वती को श्रद्धांजलि देते हुए

बड़े आत्मीय संबंध थे शांतिकुंज से

आदरणीय डॉ. साहब को पिछले 30 वर्षों से स्वामी जी का अनन्य स्नेह और आशीर्वाद मिला। वे शांतिकुंज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय आये तथा बहुमूल्य मार्गदर्शन किया व सुझाव भी दिये।

विश्व शांति के प्रयासों के अंतर्गत उन्होंने विश्व के हिंदू संगठनों को एक मंच पर लाने के लिए सन् 1996 में **'एआईएम फार सेवा'** नामक एक संस्था बनायी। गायत्री परिवार की सेवा-संवेदना को देखते हुए इस संस्था के संचालन का दायित्व आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी को सौंपा। संगठन की प्रथम बैठक देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ही आयोजित हुई थी, जिसमें विश्व हिंदू परिषद के प्रमुख श्री अशोक सिंघल, श्रीश्री रविशंकर जी, स्वामी चिदानंद मुनि आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

स्वास्थ्य समाचार जाने, प्रार्थना की

आदरणीय डॉ. साहब स्वामी जी के देहावसान से लगभग एक सप्ताह पूर्व, जब वे अस्वस्थ चल रहे थे, उनके स्वास्थ्य समाचार जानने उनके ऋषिकेश स्थित आश्रम भी गये थे। स्वामी जी की कुशलक्षेम जानने के साथ उनके हितार्थ प्रार्थना भी की। स्वामी जी का स्नेह-सद्भाव भावविभोर कर देने वाला था।

शरीर, मन और चेतना को प्रभावित करती है होम्योपैथी- आद. डॉ. साहब

होम्योपैथी एक सस्ती एवं कारगर उपचार पद्धति है। इसमें जीर्ण और असाध्य रोगों को जड़ से मिटा देने की क्षमता है। होम्योपैथी की दवाइयाँ शरीर ही नहीं, मन और चेतना को भी प्रभावित करती है। गाँव-गाँव, जन-जन को इससे लाभान्वित किया जाना चाहिए।

मरीजों के बीच डॉ. समीर सिंह और उनके साथी

शांतिकुंज प्रमुख आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 21 सितम्बर को हरिद्वार के गीत गोविन्द बैंकट हॉल में आयोजित निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए यह संदेश दिया। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं विख्यात् साहित्यकार आचार्य विष्णुदत्त राकेश ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर इस शिविर का शुभारंभ किया था।

आदरणीय डॉ. साहब ने रोगों से मुक्ति तथा रोगमुक्त रहने के लिए जीवन शैली में सुधार पर बल दिया। गीता के श्लोकों के माध्यम से सुधार के सूत्र भी बताये।

आचार्य विष्णुदत्त राकेश ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि जीवन शैली में सुधार ही स्वस्थ रहने का सुन्दर उपाय है। उन्होंने शिविर के प्रमुख आयोजक

आदरणीय डॉ. साहब को सम्मानित करते डॉ. समीर सिंह

डॉ .समीर सिंह एवं सहयोगियों की सेवाओं की सराहना की। शिविर आयोजन डॉ. समीर सिंह ने अपने स्वर्गीय दादा भगत किशोर की पुण्य स्मृति में किया था। लगभग 500 लोगों ने इसका लाभ लिया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम का ज्ञानदीक्षा समारोह

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में 21 सितम्बर को ज्ञानदीक्षा समारोह के साथ दूरस्थ शिक्षा के नये सत्र का शुभारंभ हुआ। कुलपति श्री शरद पारधी ने नवप्रवेशी विद्यार्थियों से कहा कि अपने विद्यार्थियों को महानता के पथ पर अग्रसर करना देव संस्कृति विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य है। विद्यार्थी इसे ध्यान में रखते हुए ज्ञानार्जन करेंगे तो न केवल उनकी योग्यता बढ़ेगी, बल्कि समाज के नवनिर्माण का पथ भी प्रशस्त होगा।

ज्ञानदीक्षा समारोह का आरंभ कुलपति जी द्वारा दीप प्रज्वलन और कुलगीत गान के साथ हुआ।

- 6 पाठ्यक्रम
- 1800 विद्यार्थियों ने लिया है प्रवेश

कुलसचिव श्री संदीप कुमार ने जीवन को विकसित करने के चार आयाम-शरीर, प्राण, मन और भावना के सम्यक विकास के सूत्र दिये। उन्होंने कहा कि जीवन के सम्यक विकास से जो दक्षता हासिल होती है वह आर्थिक विकास के साथ आध्यात्मिक सुख-संतोष का कारण बनती है।

दूरस्थ शिक्षा विभाग के निदेशक श्री महेन्द्र शर्मा ने बताया कि इस सत्र में एक वर्षीय एवं छः मासीय कुल छः पाठ्यक्रमों में 1800 छात्रों ने प्रवेश लिया है। हरिद्वार क्षेत्र में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति लोगों में निरंतर आकर्षण बढ़ रहा है। सर्वाधिक विद्यार्थी हरिद्वार केन्द्र के ही हैं, जिनकी संख्या गत वर्ष की तुलना में कहीं अधिक है।

डॉ. गायत्री किशोर त्रिवेदी ने ज्ञानदीक्षा का कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया। कार्यक्रम का संचालन श्री राहुल सतूना ने किया।

परिव्राजक प्रशिक्षण शिविर अब एक मासीय होगा

शांतिकुंज में चलने वाला परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र पुनः इसी अक्टूबर से एक माह का कर दिया गया है। यह सत्र प्रतिमाह की 1 से 28 तारीखों में चलेगा। समयदान के इच्छुक परिजन, जिनने पूर्व में एक मासीय युगशिल्पी प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया हो, इस सत्र में भाग ले सकते हैं। सत्र में भागीदारी हेतु पूर्व संध्या पर पहुँचना अनिवार्य है।

युग साहित्य विस्तार वर्ष

युग साहित्य आधे मूल्य पर उपलब्ध शरद पूर्णिमा तक चलेगी योजना

युग साहित्य विस्तार वर्ष की विशेष योजना के अंतर्गत गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज में आधे मूल्य पर युग साहित्य उपलब्ध कराने की योजना फिर से आरंभ हो गयी है। भाद्रपद पूर्णिमा से आरंभ हुई यह योजना आगामी 27 अक्टूबर (शरद पूर्णिमा) तक चलेगी। यह छूट पुस्तकों के अलावा सीडी एवं डीवीडी पर भी लागू होगी।

अखिल विश्व गायत्री परिवार,
शांतिकुंज-हरिद्वार-249411 (उत्तराखंड), भारत

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
पूछताछ : 09258369725
email : pragyaabhiyan@awgp.in
डिस्पैच विभाग : 09258360665
email : dispatch@awgp.org
समाचार संपादन : news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स, ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411.
फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 /2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/ 04
RENEWED 2015- 2017